



बाइजब कथा बाइजब माजटन
जन जन विचार

जन जन की बात जन जन तक

जन जन विचार



WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English
WEBSITE : www.janjanvichar.in

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY
JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 31 July 2026 :: Year-1 Vol-29 Issue-8 ::शुक्रवार। 31 जुलाई 2026। शक संवत 1948। श्रावण। कृष्ण। द्वितीया। :: पृष्ठ-20। मूल्य - 15 रुपए

जन चिंतन धनेश्वर चौधरी

आंदोलन जनता का श्रेय नेताओं का!

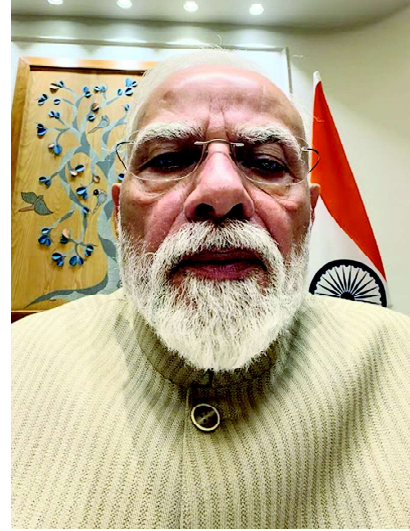
दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए छात्र आंदोलन ने एक बार फिर भारतीय राजनीति का पुराना चेहरा उजागर कर दिया। हजारों युवाओं ने दिनों तक धूप, बारिश और पुलिस कार्रवाई झेली, लेकिन जैसे ही सरकार ने कुछ मांगों स्वीकार कीं और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इस्तीफा दिया, राजनीतिक दलों में श्रेय लेने की होड़ मच गई। कोई इसे अपनी नैतिक जीत बताने लगा, तो कोई इसे अपनी रणनीति की सफलता कहने लगा।

सबसे बड़ा सवाल राहुल गांधी और पूरे विपक्ष से है। जब छात्र सड़कों पर संघर्ष कर रहे थे, तब विपक्ष का बड़ा हिस्सा प्रतीक्षा करता दिखा। आंदोलन निर्णायक मोड़ पर पहुंचा तो नेताओं के दौरे, बयान और तस्वीरें बढ़ने लगीं। क्या **शेष पृष्ठ 2 पर**

जन जन विचार ... नई दिल्ली

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा भारतीय राजनीति के लिए केवल एक प्रशासनिक बदलाव नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक जवाबदेही, जनदबाव और युवाओं की बढ़ती राजनीतिक चेतना का महत्वपूर्ण संकेत बनकर उभरा है। पिछले कई सप्ताह से चल रहे छात्र आंदोलन, व्यापक जनसमर्थन और सरकार के साथ हुई बातचीत के बाद आए इस घटनाक्रम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आज का युवा केवल दर्शक नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक विमर्श का सक्रिय भागीदार बन चुका है।

इस पूरे घटनाक्रम ने भारतीय राजनीति के सामने कई नए प्रश्न भी खड़े किए हैं। क्या यह केवल एक मंत्री के इस्तीफे की कहानी है, या फिर यह शासन व्यवस्था के उस बदलते स्वरूप का संकेत है, जहां सरकारों को जनता, विशेषकर युवाओं की अपेक्षाओं के प्रति पहले से अधिक संवेदनशील होना पड़ेगा? राजनीतिक विश्लेषकों का मानना



है कि इस घटना ने यह संदेश दिया है कि लोकतंत्र में संवाद और जवाबदेही की अनदेखी लंबे समय तक संभव नहीं है।

आंदोलन की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह रही कि इसकी शुरुआत किसी बड़े राजनीतिक दल के नेतृत्व में नहीं हुई। सोशल मीडिया के माध्यम से शुरू हुई मुहिम धीरे-धीरे राष्ट्रीय छात्र आंदोलन का रूप लेती गई।



डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उठी आवाज सड़क तक पहुंची और अंततः राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श का केंद्र बन गई। इसने यह भी साबित किया कि डिजिटल युग में जनमत बनाने की प्रक्रिया पहले की तुलना में कहीं अधिक तेज और प्रभावशाली हो चुकी है।

हालांकि आंदोलन के दौरान कई स्थानों पर तनाव और हिंसा **शेष पृष्ठ 5 पर**

डिजिटल मोर्चे पर नया संग्राम

आरक्षण और ई20 को लेकर सोशल मीडिया पर उभरी नई लहर

जन जन विचार ... नई दिल्ली

देश में विरोध-प्रदर्शन का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। अब आंदोलन केवल सड़कों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि सोशल मीडिया नए दौर के जनमत निर्माण का सबसे बड़ा मंच बनता जा रहा है। हाल के दिनों में इंस्टाग्राम और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर दो बड़े ऑनलाइन अभियान 'रिजर्वेशन हटाओ मूवमेंट (आरएचए)' और 'ई20 जनता पार्टी' तेजी से चर्चा में हैं। इन अभियानों से जुड़े सोशल मीडिया अकाउंटों ने कम समय में बड़ी संख्या में समर्थक जुटाने का दावा किया है, जिससे देशभर में व्यापक बहस छिड़ गई है।

रिजर्वेशन हटाओ अभियान से जुड़े लोग जाति आधारित आरक्षण

व्यवस्था की समीक्षा और सरकारी नौकरियों व उच्च शिक्षा में मेरिट आधारित चयन की मांग कर रहे हैं। अभियान का कहना है कि 21वीं सदी में सभी नागरिकों को समान अवसर मिलना चाहिए और सार्वजनिक जीवन में जातिगत पहचान की भूमिका कम होनी चाहिए। वहीं सामाजिक न्याय के पक्षधर इस मांग का विरोध करते हुए तर्क देते हैं कि ऐतिहासिक सामाजिक असमानताओं और प्रतिनिधित्व की कमी को दूर करने के लिए आरक्षण आज भी आवश्यक संवैधानिक व्यवस्था है।

इस अभियान की एक विशेषता यह है कि इसके संचालकों ने समर्थकों से शांतिपूर्ण ऑनलाइन विरोध की अपील की है। लोगों से सड़कों पर उतरने के बजाय सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी राय **शेष पृष्ठ 3 पर**

GAURANSHI INDUSTRIES

Purity in Every Drop, Nature in Every Product.

100% NATURAL

- NO ADDITIVES
- BOOSTS IMMUNITY
- RICH IN ANTIOXIDANTS
- ECO FRIENDLY

PURE NATURAL GOODNESS		TEA	
NAME	MAKHANA (FOX NUT SUPERFOOD)	ASSAM CTC TEA	ASSAM CTC TEA
SIZE	200gm	250gm	100gm

HONEY	
NAME	MORINGA HONEY
SIZE	200gm

HONEY	
NAME	TULSI HONEY
SIZE	200gm

HONEY		HONEY		HONEY	
NAME	MUSTARD HONEY	LITCHI HONEY	WILD FOREST HONEY		
SIZE	200gm	200gm	200gm		

RAW & UNPROCESSED

PURE & NATURAL

DIRECTLY FROM OUR FARMS

TRUSTED BY THOUSANDS

3rd Floor, IIT Road, Jayguru, Amingaon, Kamrup, Assam - 781031, India

Contact : +91-88224 20619

E-Mail : gauranshiind@gmail.com
www.gauranshiindustries.com

असम बाढ़ का केंद्रीय आकलन पूरा

जन जन विचार
... गुवाहाटी

असम में हालिया भीषण बाढ़ से हुए नुकसान का आकलन करने पहुंची केंद्र सरकार की छह सदस्यीय अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय टीम ने चार दिवसीय दौरा पूरा करने के बाद 30 जुलाई को दिसपुर स्थित जनता भवन में मुख्य सचिव रवि कोटा के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। टीम ने चराइदेव, शिवसागर, जोरहाट और गोलाघाट जिलों में बाढ़ से हुए नुकसान, राहत कार्यों और पुनर्वास की स्थिति का विस्तृत जायजा लिया।

बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव (राजस्व एवं आपदा प्रबंधन) तथा असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की मुख्य कार्यकारी अधिकारी एल. स्वीटी चांगसान ने केंद्रीय दल को बताया कि इस बार की बाढ़ सामान्य नहीं

थी। उन्होंने कहा कि नगालैंड के मोकोकचुंग, वोखा और मोन जिलों में 19 जुलाई को हुई अत्यधिक वर्षा, साथ ही चराइदेव और शिवसागर में स्थानीय स्तर पर हुई भारी बारिश के कारण अभूतपूर्व बाढ़ आई। उन्होंने यह भी बताया कि चराइदेव और शिवसागर पारंपरिक रूप से बाढ़ प्रभावित जिले नहीं रहे हैं।

राज्य सरकार ने केंद्रीय टीम को बताया कि बाढ़ से हजारों घर, सड़कें, पुल, कृषि भूमि और लोगों की आजीविका प्रभावित हुई है। राहत एवं बचाव कार्यों में एसडीआरएफ, एनडीआरएफ, सेना, अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवाओं तथा स्थानीय स्वयंसेवकों ने मिलकर अभियान चलाया। प्रभावित परिवारों को चावल, दाल, सरसों का तेल, नमक और मोमबत्तियों सहित राहत सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है।

रोहा की बेटी तुष्टिमना का कमाल : 24 घंटे में छह शास्त्रीय नृत्य, विश्व रिकॉर्ड में दर्ज हुआ नाम

जन जन विचार
... रोहा

असम के नगांव जिले के रोहा की बेटी तुष्टिमना नाथ ने लगातार 24 घंटे तक भारत के छह शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति देकर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया है। इस उपलब्धि से पूरे रोहा और असम में खुशी की लहर है।

रोहा के मेटेका निवासी मानिक चंद्र नाथ और रंजना नाथ की पुत्री तुष्टिमना नाथ ने गत 26 जुलाई की सुबह 8 बजे अपनी प्रस्तुति शुरू की। उन्होंने क्रमशः भरतनाट्यम, कथक, सत्रिया, ओडिसी, कुचिपुड़ी और मोहिनीअट्टम की निरंतर प्रस्तुति देते हुए 27 जुलाई की सुबह 8 बजे 24 घंटे का यह कठिन सफर सफलतापूर्वक पूरा किया। उनकी प्रस्तुति समाप्त होते ही रोहा ब्रीड संघ प्रेक्षागृह तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

तुष्टिमना ने रोहा संगीत कानन



तथा अंकनिर कविता घर, असम केंद्रीय समिति में चार वर्षों तक भरतनाट्यम का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उनकी इस उपलब्धि को क्षेत्र के लिए गर्व का क्षण बताया जा रहा है।

समापन समारोह में गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के एशिया प्रमुख मनीष विश्वा ने तुष्टिमना नाथ को प्रशस्ति-पत्र और पदक प्रदान किया। उन्होंने इस असाधारण उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा कि यह युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक उदाहरण है।

समारोह में उपस्थित गणमान्य लोगों ने तुष्टिमना नाथ को फूलाम गामोछा ओढ़ाकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में एकेजी केंद्रीय समिति, रोहा के पदाधिकारी, शिक्षाविद, कलाकार, पत्रकार तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

तुष्टिमना नाथ की इस ऐतिहासिक उपलब्धि ने न केवल रोहा, बल्कि पूरे असम का नाम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया है।

मेघालय में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान : 150 से अधिक पौधे रोपे

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा, मेघालय और सामाजिक वानिकी प्रभाग की संयुक्त पहल)

जन जन विचार
... शिलांग

पर्यावरण संरक्षण और मातृत्व के सम्मान को समर्पित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत 30 जुलाई को मेघालय के शिलांग स्थित लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर परिसर में भव्य वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय और सामाजिक वानिकी प्रभाग, मेघालय के संयुक्त तत्वावधान में हुए इस अभियान में अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए 150 से अधिक उपयोगी पौधे लगाए।

कार्यक्रम का नेतृत्व प्रधान महालेखाकार एवं संपदा प्रबंधक



लहुंखोथांग हंगसिंग ने किया। इस अवसर पर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डी. सथियन (आईएफएस), प्रभागीय वन अधिकारी श्रीमती एच. लाटो (आईएफएस), उप वन संरक्षक कैलिश बी. भावर (आईएफएस), उप वन संरक्षक (एफ.सी. एवं कैम्पा), शिलांग, श्रीमती धनलक्ष्मी

चौरसिया, संपदा अधिकारी व वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), रूपक साहा, वरिष्ठ उप महालेखाकार, एक्वारियस मैथ्यू, स्थापना अधिकारी, मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा) और लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा सहित कई वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि 'एक पेड़ मां के नाम' केवल वृक्षारोपण अभियान नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और मातृत्व के प्रति सम्मान का राष्ट्रीय जनआंदोलन है। प्रत्येक नागरिक यदि अपनी मां के नाम पर एक पौधा लगाए और उसकी देखभाल करे, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक हरित और

सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित किया जा सकता है।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 जून 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में पीपल का पौधा लगाकर इस अभियान की शुरुआत की थी। इसका उद्देश्य देशभर में जनभागीदारी के माध्यम से हरित आवरण बढ़ाना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना तथा माताओं के प्रति सम्मान की भावना को मजबूत करना है।

शिलांग में आयोजित इस कार्यक्रम ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी और सामाजिक सहभागिता का प्रभावी संदेश दिया। आयोजकों ने सभी नागरिकों से अपनी मां के नाम एक पौधा लगाकर उसकी नियमित देखभाल करने का आह्वान किया।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

आरक्षण और ई20 को ...

रखने का आग्रह किया जा रहा है। हालांकि प्रशासन भी डिजिटल गतिविधियों पर नजर बनाए हुए है ताकि किसी प्रकार की कानून-व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न न हो।

इसी बीच ई20 जनता पार्टी नाम से चल रहा एक अन्य डिजिटल अभियान भी तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यह कोई पंजीकृत राजनीतिक दल नहीं, बल्कि ई20 पेट्रोल के साथ-साथ बिना एथेनॉल वाले शुद्ध पेट्रोल का विकल्प उपलब्ध कराने की मांग करने वाला ऑनलाइन अभियान है। अभियान से

जुड़े लोगों का कहना है कि उपभोक्ताओं को अपनी आवश्यकता और वाहन की क्षमता के अनुसार ईंधन चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

विशेषज्ञों का मानना है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म अब केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहे, बल्कि जनमत, सामाजिक बहस

और सार्वजनिक नीतियों को प्रभावित करने का प्रभावी मंच बन चुके हैं। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इन ऑनलाइन अभियानों का प्रभाव केवल सोशल मीडिया तक सीमित रहता है या सार्वजनिक नीति और राजनीतिक विमर्श में भी दिखाई देता है।

संपादकीय

केसरिया जर्सी

भारतीय हॉकी टीम की नई केसरिया जर्सी को लेकर उठे विवाद ने एक बार फिर खेल और राजनीति के रिश्ते पर बहस छेड़ दी है। हॉकी इंडिया का कहना है कि नीले एस्ट्रो टर्फ पर पारंपरिक नीली जर्सी खिलाड़ियों की दृश्यता को प्रभावित करती थी। कोचों और खिलाड़ियों की तकनीकी सलाह के आधार पर केसरिया रंग चुना गया, जो तिरंगे का भी एक प्रमुख रंग है। दूसरी ओर, पूर्व कप्तान वीरेन रासकिन्हा जैसे खिलाड़ियों का मानना है कि भारतीय हॉकी की पहचान दशकों से नीली जर्सी रही है और इसे बदलने से टीम की विरासत कमजोर होती है।

दोनों पक्षों की अपनी-अपनी दलीलें हैं। यदि जर्सी का रंग बदलने का फैसला वास्तव में खेल की तकनीकी जरूरत और खिलाड़ियों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से लिया गया है, तो इसे उसी नजरिए से देखा जाना चाहिए। वहीं, खेल संगठनों की जिम्मेदारी यह भी है कि ऐसे महत्वपूर्ण फैसलों से पहले खिलाड़ियों, पूर्व खिलाड़ियों और प्रशंसकों का विश्वास कायम रखें तथा निर्णय प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी बनाएं।

किसी भी राष्ट्रीय टीम की असली पहचान उसकी जर्सी का रंग नहीं, बल्कि मैदान पर उसका प्रदर्शन, अनुशासन और देश के लिए जीतने का जज्बा होता है। अगर नई जर्सी भारतीय टीम को बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करती है, तो रंग विवाद अपने आप महत्व खो देगा। लेकिन यदि यह फैसला अनावश्यक विवाद का कारण बनता है, तो भविष्य में ऐसे निर्णयों पर व्यापक संवाद जरूरी होगा।

विकिटम कार्ड न खेलें जुनैद भाई

जंतर-मंतर छात्र आंदोलन के दौरान प्रदर्शनकारियों के लिए भोजन की व्यवस्था करने वाले मोहम्मद जुनैद अब राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप के केंद्र में हैं। एक ओर भाजपा नेता अमील शम्सी फंडिंग के स्रोत पर सवाल उठा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर विपक्ष इसे राजनीतिक प्रताड़ना का मामला बता रहा है। ऐसे में यह मुद्दा केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि पारदर्शिता और जवाबदेही की व्यापक बहस बन जाता है।

लोकतंत्र में किसी भी व्यक्ति या संगठन द्वारा बड़े स्तर पर धन खर्च किए जाने पर उसके स्रोत के बारे में सवाल पूछना असामान्य नहीं है। यदि जांच कानून के दायरे में और निष्पक्ष तरीके से हो रही है, तो संबंधित व्यक्ति का सहयोग करना भी उतना ही आवश्यक है। वहीं जांच एजेंसियों की जिम्मेदारी है कि कार्रवाई तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर हो, न कि किसी राजनीतिक धारणा या दबाव के आधार पर। दूसरी ओर, बिना ठोस प्रमाण किसी व्यक्ति को दोषी ठहराना या उसे राजनीतिक प्रतीक बना देना भी उचित नहीं कहा जा सकता। आरोप और प्रत्यारोप लोकतांत्रिक राजनीति का हिस्सा हो सकते हैं, लेकिन अंतिम निष्कर्ष तथ्यों और निष्पक्ष जांच से ही निकलना चाहिए।

यह प्रकरण एक बड़ा संदेश भी देता है। जन आंदोलनों में आर्थिक सहयोग और चंदे की व्यवस्था पूरी तरह पारदर्शी होनी चाहिए। यदि धन का स्रोत सार्वजनिक और स्पष्ट होगा, तो अनावश्यक विवादों और राजनीतिक आरोपों की गुंजाइश स्वतः कम हो जाएगी। लोकतंत्र में जवाबदेही सभी पक्षों की समान जिम्मेदारी है। सरकार को निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करनी चाहिए, जबकि सामाजिक संगठनों और आंदोलनकारियों को भी पारदर्शिता बनाए रखनी चाहिए।

छायावाद की परतें और नामवर सिंह से मोहिनी सिंह का संवाद

जन जन विचार

... प्रो. प्रदीप के शर्मा

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) की ढलती शाम में गंगा ढाबे (गंगा कॉफी हाउस) की रौनक हमेशा से खास रही है। कुल्हड़ की चाय की चुस्कियों के साथ यहां रोज नए विचार जन्म लेते हैं और बहसों परवान चढ़ती हैं। ऐसी ही एक शाम जब नामवर सिंह सिंह जी गंगा ढाबे पर अपने चिरपरिचित अंदाज में कुल्हड़ की चाय का आनंद ले रहे थे, तब छायावाद की एक गंभीर शोध-अध्येता मोहिनी सिंह वहां पहुंचती हैं। मोहिनी सिंह, जो नामवर सिंह जी को अपना मानस गुरु मानती थीं और छायावाद जिनका न केवल शोध का विषय था बल्कि बेहद प्रिय क्षेत्र भी है। गुरु के प्रति अपार श्रद्धा रखते हुए भी उनके भीतर छायावाद को लेकर कई गहरी जिज्ञासाएं थीं, जिन्हें वे नामवर जी के सामने रखने से खुद को रोक न सकीं। चाय के कप से उठते भाप के बीच नामवर सिंह और मोहिनी सिंह के बीच छायावाद की परतों को टटोलता एक बेहद जीवंत और साहित्यिक संवाद शुरू हुआ।

मोहिनी ने आदरपूर्वक प्रणाम करते हुए अपनी चर्चा की शुरुआत की और कहा कि गुरुजी, आपकी पुस्तक 'छायावाद' ने हम जैसे शोधार्थियों को इस काव्य-आंदोलन को देखने की एक नई ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि दी है। आपने छायावाद को केवल रहस्यवाद या पलायनवाद न मानकर भारतीय नवजागरण का सांस्कृतिक विद्रोह सिद्ध किया, जिसने इसे एक विराट फलक दिया। लेकिन एक पाठक और शोधार्थी के तौर पर जब मैं महादेवी वर्मा की वेदना को पढ़ती हूँ, तो मुझे लगता है कि क्या छायावाद की इस विराट व्याख्या में स्त्री की निजी घुटन और उसकी स्वतंत्र अस्मिता का प्रश्न कहीं थोड़ा नेपथ्य में नहीं चला गया? क्या महादेवी वर्मा का 'नीर भरी दुःख की बदली' कहना केवल आध्यात्मिक या वैयक्तिक अनुभूतियों तक सीमित है, या वह उस दौर के पुरुष-सत्तात्मक समाज के प्रति एक मूक स्त्री-विद्रोह भी है?

नामवर सिंह जी ने मुस्कराते हुए चाय का घूंट लिया और अपनी गंभीर, स्पष्ट आवाज में कहा कि मोहिनी, जब हम साहित्य का ऐतिहासिक मूल्यांकन करते हैं, तो हमें तत्कालीन युगीन चेतना को समझना पड़ता है। महादेवी जी का सम्मान और उनका योगदान छायावाद में अतुलनीय है। छायावाद के चार स्तंभों में वे स्वयं एक सुदृढ़ आधार हैं। किंतु जब हम जयशंकर प्रसाद या सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य का विस्तार देखते हैं, तो वहां बाह्य जगत् के व्यापक सामाजिक और राष्ट्रीय संघर्ष अधिक प्रखरता से सामने आते हैं। महादेवी वर्मा की कविता आंतरिक अनुभूतियों, सूक्ष्म संवेदनात्मक गहराई और वैयक्तिक वेदना का प्रामाणिक संसार है। उनकी वेदना में सामाजिकता का स्पर्श अवश्य है, परंतु उनका मुख्य केंद्र बिंदु आंतरिक बोध ही रहा।

इस पर मोहिनी सिंह ने बहुत विनम्रता लेकिन तार्किकता से अपना पक्ष रखते हुए कहा कि गुरुदेव, यदि हम महादेवी वर्मा की कविता को उनके गद्य 'शृंखला की कड़ियां' के आलोक में देखें, तो उनकी वेदना केवल व्यक्तिगत रूदन नहीं लगती। वह उस दौर की स्त्री के स्वाभिमान और उसके संघर्ष का घोषणापत्र जान पड़ती है। जब हम छायावाद को मुक्ति का काव्य कहते हैं, तो उसमें स्त्री की मुक्ति के इस विशिष्ट स्वर को रेखांकित करना भी उतना ही आवश्यक हो जाता है।

नामवर सिंह ने मोहिनी सिंह की शोध-दृष्टि और सजगता की सराहना करते हुए कहा कि एक अध्येता के रूप में तुम्हारा यह दृष्टिकोण विचारणीय है। छायावाद की खूबसूरती ही यही है कि वह हर नई पीढ़ी को अपने भीतर से नए अर्थ खोजने का अवसर देता है। कविता को केवल किसी एक ढर्रे में बांधकर नहीं देखा जा सकता।

चर्चा आगे बढ़ी और मोहिनी सिंह ने जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' का जिक्र छेड़ते हुए कहा कि गुरुजी, आपने कामायनी को आधुनिक सभ्यता के संकट और पूंजीवादी चेतना के रूपक के रूप में बहुत सुंदर ढंग से व्याख्यायित किया है। मनु का अंतर्द्वंद्व और इड़ा-श्रद्धा का संतुलन बहुत बारीक है। लेकिन जब मैं एक पाठक के रूप में 'श्रद्धा' और 'इड़ा' के चरित्रों को देखती हूँ, तो मन में एक प्रश्न उठता है। कामायनी में श्रद्धा के समर्पण और मातृत्व को तो पूजनीय बनाकर स्थापित किया गया, लेकिन इड़ा जैसी स्वतंत्र, बुद्धिपरक और नगर-नियोजन करने वाली तार्किक स्त्री को एक समस्या की तरह क्यों प्रस्तुत किया गया? क्या यहां पुरुष-मनोविज्ञान काम नहीं कर रहा था?

नामवर सिंह जी ने अपनी चिरपरिचित शैली में जवाब देते हुए कहा कि मोहिनी, कामायनी को समझने के लिए हमें प्रसाद जी के दर्शन और उनके समय के वैश्विक संकट को देखना होगा। प्रसाद जिस समय लिख रहे थे, वहां अति-बुद्धिवाद और अति-हृदयवाद का द्वंद्व पूरी मानव सभ्यता का संकट था। इड़ा केवल एक स्त्री पात्र नहीं है, वह उस अति-तार्किक बुद्धिवाद की प्रतीक है जो मनुष्य को आत्मीयता से दूर कर औद्योगिक यांत्रिक विसंगतियों की ओर ले जाता है। वहीं श्रद्धा रागात्मक वृत्ति और सामंजस्य का प्रतीक है जो बिखरते हुए मनु यानी मनुष्य को जोड़ती है। इसे केवल स्त्री-पुरुष के जेंडर द्वंद्व तक सीमित कर देना कामायनी के विराट दार्शनिक और ऐतिहासिक कैनवास को छोटा कर देने जैसा होगा।

मोहिनी सिंह ने नामवर सिंह जी की बात को आत्मसात करते हुए जोड़ा कि आपकी बात बिल्कुल सटीक है कि वह एक विराट दार्शनिक संकट था, परंतु आज की शोध-चेतना में जब हम छायावादी सौंदर्यशास्त्र का पुनः पाठ करते हैं, तो हमें लगता है कि प्रकृति के मानवीकरण में भी कई बार प्रकृति को 'नारी' के रूप में ही देखा गया। सुमित्रानंदन पंत जी की पंक्तियां 'छोड़ दुमों की मृदु छाया' में भी स्त्री-सौंदर्य को एक ऐसे आवरण या रुकावट के रूप में दिखाया गया जो कवि को उसके लक्ष्य से भटका सकता है। क्या यह कहीं न कहीं उस पारंपरिक सोच का आधुनिक रूप नहीं था जहाँ नारी को साधना में बाधक माना जाता था?

नामवर सिंह जी ने कुल्हड़ की अंतिम चुस्की लेते हुए वात्सल्य भाव से मोहिनी सिंह की ओर देखा और कहा कि एक गंभीर पाठक और अध्येता के रूप में तुम्हारी यह दृष्टि यह दर्शाती है कि छायावाद आज भी कितना जीवंत और अर्थगर्भित है। छायावाद ने प्रकृति को दरबारी साहित्य के उद्दीपन रूप से निकालकर उसे एक स्वतंत्र और गरिमापूर्ण सत्ता दी। जब कवि प्रकृति में नारी सौंदर्य की झलक देखता है, तो वह वस्तुकरण नहीं, बल्कि प्रकृति और नारी दोनों को एक साथ गरिमा और उदात्तता प्रदान करने का प्रयास है। लेकिन तुम्हारा यह दृष्टिकोण भी आलोचना के नए क्षितिज खोलता है। आलोचना का काम उत्तर देना ही नहीं, नए सवाल खड़े करना भी है।

गंगा ढाबे की उस शाम में नामवर सिंह और उनकी शिष्या मोहिनी सिंह के बीच का यह संवाद केवल दो व्यक्तियों की बातचीत नहीं था, बल्कि यह हिंदी साहित्य की समृद्ध आलोचनात्मक परंपरा और नई शोध-चेतना का एक आत्मीय मिलन था। जहां नामवर सिंह जी का अनुभव और ऐतिहासिक दृष्टि छायावाद को एक वृहत् सामाजिक फलक पर स्थापित कर रही थी, वहीं मोहिनी सिंह की जिज्ञासा और सूक्ष्म पाठक-दृष्टि उसके भीतर के संवेदनशील और अनछुए कोणों को उजागर कर रही थी। चाय समाप्त हो चुकी थी, लेकिन छायावाद के सौंदर्य, उसकी परतों और उसकी गहराई पर हुआ यह संवाद गंगा ढाबे के साहित्यिक माहौल को और अधिक समृद्ध कर गया।

सीजेपी आंदोलन पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

जन जन विचार

...नई दिल्ली

नीट आंदोलन और सीजेपी (काँकरोच जनता पार्टी) के प्रदर्शन को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने महत्वपूर्ण निर्देश जारी करते हुए देशभर की सरकारों को आदेश दिया कि 18 वर्ष से कम आयु के उन सभी प्रदर्शनकारियों को तत्काल रिहा किया जाए जिनका कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। अदालत ने स्पष्ट किया कि लोकतांत्रिक विरोध का अधिकार सुरक्षित है, लेकिन कानून के दायरे में रहकर ही इसका पालन होना चाहिए।

मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पीठ ने प्रदर्शन के दौरान पुलिस की कथित ज्यादतियों की स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच कराने की आवश्यकता जताई। अदालत ने कहा कि जिसने भी कानून अपने हाथ में लिया है, चाहे वह पुलिसकर्मी हो या कोई अन्य, उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। साथ ही सीसीटीवी, ड्रोन और अन्य डिजिटल साक्ष्यों को सुरक्षित रखने तथा प्रदर्शनकारियों के निजी डेटा को सार्वजनिक न करने के निर्देश भी दिए गए।

सीजेपी और सरकार के बीच फिर टकराव : एफआईआर वापसी और रिहाई की मांग पर अड़ा संगठन

नई दिल्ली। नीट आंदोलन से जुड़े हिंसा और गिरफ्तारी मामलों को लेकर सीजेपी (काँकरोच जनता पार्टी) और केंद्र सरकार के बीच टकराव बढ़ता जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा बिना आपराधिक पृष्ठभूमि वाले 18 वर्ष से कम उम्र के प्रदर्शनकारियों की रिहाई के निर्देश के बाद भी सीजेपी ने सभी गिरफ्तार प्रदर्शनकारियों की रिहाई और दर्ज एफआईआर वापस लेने की मांग दोहराई है।

सीजेपी प्रवक्ता सौरव दास ने कहा कि सरकार को आंदोलनकारियों पर दर्ज सभी मुकदमे वापस लेने और हिरासत में लिए गए सभी प्रदर्शनकारियों को तत्काल रिहा करने की लिखित गारंटी देनी चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि मांगें पूरी नहीं हुईं तो संगठन दिल्ली सहित देशभर में फिर से आंदोलन

करेगा।

हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में स्पष्ट किया है कि राहत केवल उन प्रदर्शनकारियों को मिलेगी जिनका कोई पूर्व आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। अदालत ने हिंसा, तोड़फोड़ और कानून व्यवस्था प्रभावित करने वाले मामलों की निष्पक्ष जांच जारी रखने के निर्देश भी दिए हैं।

सीजेपी की मांग पर सवाल उठाते हुए विरोधियों का कहना है कि आंदोलन के दौरान सुरक्षा बलों पर हमले और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले लोगों की पहचान जांच के आधार पर होनी चाहिए। पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि अदालत का फैसला मन मुताबिक न होने पर न्यायपालिका पर सवाल उठाना उचित नहीं है।

‘पुलिस कर सकती है पैलेट गन का इस्तेमाल’

नई दिल्ली। सीजेपी के विरोध प्रदर्शन के दौरान पैलेट गन के इस्तेमाल को लेकर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि असाधारण परिस्थितियों में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस को पैलेट गन के इस्तेमाल का अधिकार है। हालांकि अदालत ने स्पष्ट किया कि बल प्रयोग कानून के दायरे में और परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए।

कोर्ट ने दिल्ली सरकार को निर्देश दिया कि प्रदर्शन के दौरान कथित रूप से घायल हुए लोगों को उचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाए। साथ ही, 20 जुलाई को हुए प्रदर्शन में पैलेट गन के इस्तेमाल की जांच करने और जंतर-मंतर पर तैनात आरएएफ के गोला-बारूद का रिकॉर्ड सुरक्षित रखने को भी कहा।

पीओके में बवाल : प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी के दावे, 30 से अधिक मौतों की खबर

जन जन विचार

...नई दिल्ली

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में सरकार विरोधी आंदोलन ने हिंसक रूप ले लिया है। विभिन्न मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, पाकिस्तानी सुरक्षा बलों द्वारा प्रदर्शनकारियों पर की गई गोलीबारी में 30 से अधिक लोगों के मारे जाने और सैकड़ों के घायल होने की खबर है। यह भी दावा किया गया है

कि कार्रवाई के बाद कई शव लापता हैं और पूरे क्षेत्र में इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी गई हैं। हालांकि, इन दावों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हो सकी है।

प्रदर्शनों का नेतृत्व जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएएसी) कर रही है। संगठन का आरोप है कि पाकिस्तान प्रशासन विवादित विधानसभा सीटों में राजनीतिक हस्तक्षेप कर स्थानीय जनादेश को प्रभावित

करता है। इसके अलावा महंगाई, प्रशासनिक उपेक्षा, कथित राजनीतिक भेदभाव और नागरिक अधिकारों के हनन को लेकर भी लोगों में भारी नाराजगी है।

इस बीच पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने प्रदर्शनकारियों को ‘दुश्मन’ बताते हुए उनसे बातचीत से इनकार कर दिया। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के विशेष सलाहकार राणा सनाउल्लाह ने भी सरकार के

सख्त रुख का समर्थन करते हुए कहा कि राज्य को चुनौती देने वालों के खिलाफ बल प्रयोग किया जाएगा।

भारत ने इस घटनाक्रम पर चिंता जताते हुए कहा है कि पीओके में जारी विरोध प्रदर्शन वहां के लोगों के आर्थिक शोषण, लोकतांत्रिक अधिकारों के दमन और प्रशासनिक विफलताओं का परिणाम हैं। विदेश मंत्रालय ने एक बार फिर दोहराया कि पाकिस्तान का उस

क्षेत्र पर कब्जा अवैध है और वहां के लोगों के मानवाधिकारों का लगातार उल्लंघन हो रहा है।

यदि गोलीबारी और मौतों के दावों की पुष्टि होती है, तो यह हाल के वर्षों में पीओके में सबसे गंभीर घटनाओं में से एक होगी। फिलहाल इंटरनेट बंद होने और स्वतंत्र पहुंच सीमित होने के कारण वास्तविक स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी है, लेकिन पूरे क्षेत्र में तनाव चरम पर बताया जा रहा है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

‘जेन-जी’ की ताकत

की घटनाएं भी सामने आईं, लेकिन आंदोलन के नेतृत्व की ओर से लगातार शांतिपूर्ण और संवैधानिक विरोध की अपील की जाती रही। यही कारण रहा कि छात्रों की मांगों को समाज के विभिन्न वर्गों का समर्थन मिला और शिक्षा व्यवस्था में सुधार की बहस राष्ट्रीय मुद्दा बन गई।

धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे के साथ सरकार ने तत्काल राजनीतिक संदेश तो दे दिया, लेकिन इससे शिक्षा व्यवस्था की मूल चुनौतियां स्वतः समाप्त नहीं हो जातीं। प्रश्नपत्रों की सुरक्षा, परीक्षा प्रणाली की

पारदर्शिता, भर्ती प्रक्रियाओं में समयबद्धता, तकनीकी निगरानी, संस्थागत जवाबदेही और युवाओं के भरोसे की पुनर्स्थापना जैसे अनेक मुद्दे अब भी समाधान की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि इन पर ठोस और दीर्घकालिक सुधार नहीं हुए, तो असंतोष भविष्य में फिर नए रूप में सामने आ सकता है।

इस घटनाक्रम ने विपक्ष के सामने भी चुनौती खड़ी कर दी है। केवल सरकार की आलोचना पर्याप्त नहीं होगी। युवाओं की आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षा सुधार, रोजगार और परीक्षा प्रणाली पर ठोस वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करना भी उतना ही आवश्यक होगा। वहीं मीडिया के लिए भी यह आत्ममंथन का विषय है कि सामाजिक आंदोलनों को केवल

राजनीतिक टकराव के नजरिए से देखने के बजाय उनके मूल कारणों पर भी गंभीर विमर्श किया जाए।

भारत विश्व की सबसे युवा आबादी वाले देशों में है। ऐसे में युवाओं का व्यवस्था पर विश्वास लोकतंत्र की सबसे बड़ी पूंजी है। यदि छात्र यह महसूस करें कि उनकी मेहनत निष्पक्ष व्यवस्था के आधार पर आंकी जाएगी, तभी लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास मजबूत होगा। इसलिए यह समय केवल राजनीतिक विजय या पराजय का नहीं, बल्कि शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, आधुनिक और जवाबदेह बनाने का है।

धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा भारतीय लोकतंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संदेश है।

यह बताता है कि लोकतंत्र में जनता की आवाज, संवाद और जवाबदेही आज भी सर्वोच्च हैं। लेकिन किसी भी आंदोलन की वास्तविक सफलता केवल पद परिवर्तन में नहीं, बल्कि व्यवस्था परिवर्तन में होती है। यदि इस घटनाक्रम के बाद परीक्षा प्रणाली अधिक पारदर्शी बनती है, तकनीकी सुरक्षा मजबूत होती है, दोषियों को समयबद्ध दंड मिलता है और युवाओं का विश्वास लौटता है, तभी यह आंदोलन भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक सकारात्मक मोड़ के रूप में याद किया जाएगा। अन्यथा यह केवल एक राजनीतिक घटना बनकर इतिहास के पन्नों में सीमित रह जाएगा।

प्रेमचंद के 'फटे जूते' और उनका सच

जन जन विचार



... डॉ मुकेश कुमार

हरिशंकर परसाई जब प्रेमचंद की एक पुरानी तस्वीर को देखते हैं, तो उनकी दृष्टि प्रेमचंद के फटे जूते से बाहर निकलती उंगली पर ठिठक जाती है। परसाई जी लिखते हैं, 'प्रेमचंद का एक फोटो मेरे सामने है, जिसमें वे पत्नी के साथ खिंचवा रहे हैं। सिर पर किसी मोटे कपड़े की टोपी, कुर्ता और धोती पहने हैं... बाएं जूते में बड़ा छेद हो गया है, जिसमें से उंगली बाहर निकल आई है। मेरी दृष्टि इस जूते पर अटक गई है। सोचता हूं, फोटो खिंचवाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी! पर नहीं, इस आदमी में पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। इसमें जैसा है, वैसा ही दिखने की अद्भुत क्षमता है।' परसाई का यह वाक्य केवल एक लेखक की वेशभूषा पर टिप्पणी नहीं है, बल्कि वह भारतीय समाज की उस गहरी विडंबना और खोखलेपन पर करारा प्रहार है, जहां इंसान अपने वास्तविक स्वरूप को छिपाकर छद्म और दिखावे का आवरण ओढ़ने में ही अपनी श्रेष्ठता समझता है।

प्रेमचंद का वह फटा जूता महज एक फटी हुई वस्तु नहीं है, बल्कि वह उस संपूर्ण जीवन-दर्शन का प्रतीक है जो बाहरी चमक-धमक के सामने कभी नतमस्तक नहीं हुआ। हिंदी साहित्य के 'उपन्यास सम्राट' और 'युग प्रवर्तक' कहे जाने वाले लेखक के पास एक अच्छा जूता तक न होना, उनकी आर्थिक विपन्नता से अधिक उनके अटूट स्वाभिमान और बेबाकी को रेखांकित करता है। उन्होंने अपनी दरिद्रता को कभी छिपाने का प्रयास नहीं किया। समाज की उस बनावटी मानसिकता पर व्यंग्य करते हुए, जहां लोग फोटो खिंचाने के लिए कोट, टोपी और यहां तक कि दूसरे की पत्नी तक मांग लाते हैं, प्रेमचंद का अपनी सहज स्थिति में मुस्कुराते हुए फोटो खिंचवा लेना उनके भीतर की असीम नैतिक शक्ति को दिखाता है। इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा का एक कथन अत्यंत प्रासंगिक है। वे कहते हैं, 'प्रेमचंद की महानता इस बात में है कि वे जनसाधारण के दुःखों से केवल सहानुभूति नहीं

रखते, बल्कि स्वयं उसी जनसाधारण के धरातल पर जीवन जीते हैं। उनके साहित्य की प्रामाणिकता उनके जीवन की सादगी और यथार्थ से ही उत्पन्न होती है।' यह सादगी ही प्रेमचंद को जन-जन का लेखक बनाती है और उनके विचारों को अमरता प्रदान करती है।

परसाई जी इस आलेख में एक अत्यंत गूढ़ रूपक का प्रयोग करते हैं- 'रास्ते का टीला'। वे कहते हैं कि आम आदमी जीवन में आई कठिनाइयों, रूढ़ियों और भ्रष्ट व्यवस्था रूपी टीलों से बचकर, उनसे समझौता करके किनारे से निकल जाने की कोशिश करता है। जूता टीले से टकराकर फटता है, और आम इंसान जूते को बचाने के चक्कर में अपने स्वाभिमान का सौदा कर लेता है। परंतु प्रेमचंद ऐसे लेखक थे जिन्होंने समझौते की राह नहीं चुनी। उन्होंने जीवन भर सामाजिक कुरीतियों, विषमता, छुआछूत और आर्थिक शोषण के टीलों पर प्रहार किया, जिसके कारण भले ही उनका जूता घिस गया या फट गया, किंतु उनके पैर की उंगली और उनका स्वाभिमान सुरक्षित रहा। वे टीले को ठोकर मारते रहे, उससे बचकर सुरक्षित रास्ता निकालने का प्रयास उन्होंने कभी नहीं किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी प्रेमचंद के इस अडिग व्यक्तित्व की व्याख्या करते हुए लिखा था, 'प्रेमचंद साहित्य में उस अखंड सत्य के प्रतीक हैं जो किसी भी प्रकार के बाह्य दबाव या प्रलोभन के आगे झुकना नहीं जानता। उनका यथार्थवाद जीवन के कठोर धरातल पर खड़ा होकर सत्य को जस का तस स्वीकार करने का साहस देता है।'

प्रेमचंद का संपूर्ण जीवन इस बात का प्रमाण है कि एक रचनाकार को अपने सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों से कभी समझौता नहीं करना चाहिए। जब वे जमींदारों, महाजनों और ब्रिटिश हुकूमत के शोषण के खिलाफ लिख रहे थे, तब उनके सामने अनेक आर्थिक लालच और प्रलोभन आए होंगे, लेकिन उन्होंने अपनी कलम की धार को कभी मंद नहीं होने दिया। उन्होंने फटे जूते में जीना पसंद किया, लेकिन अपनी वैचारिक स्वतंत्रता को गिरवी नहीं रखा। उनकी यही निर्भीकता उनके उपन्यासों जैसे 'गोदान', 'गबन' और कहानियों जैसे 'पूँस की रात' व 'कफन' में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। प्रसिद्ध कथाकार जैनेंद्र कुमार ने प्रेमचंद की सत्यनिष्ठा

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 146 वीं जयंती (31 जुलाई 1880) पर विशेष



यदि आज के वर्तमान समय के संदर्भ में देखें, तो परसाई का यह व्यंग्य पहले से कहीं अधिक सटीक, प्रासंगिक और विचारणीय प्रतीत होता है। आज का युग 'सोशल मीडिया', 'फिल्टर', 'फेक शो-ऑफ' और 'पर्सनल ब्रांडिंग' का युग है, जहां व्यक्ति जो वास्तव में है, उसे छिपाकर वैसा दिखने की अंधी दौड़ में लगा है जैसा समाज और बाजार देखना चाहता है। आज हम एक ऐसे अति-उपभोक्तावादी समाज में जी रहे हैं जहां इंसान का मूल्यांकन उसके आचार-विचार, ज्ञान, संवेदनशीलता या नैतिक मूल्यों से नहीं, बल्कि उसके पहने हुए ब्रांडेड कपड़ों, जूतों, घड़ियों और गाड़ियों से किया जाता है। लोग अपने वास्तविक अस्तित्व और आत्म-सम्मान को भूलकर केवल बाहरी आवरण को चमकाने में लगे हैं। इस दौर में प्रेमचंद का फटा जूता हमें यह शिक्षा देता है कि बाहरी आवरण से अधिक आंतरिक चरित्र, सच्चाई और सत्यनिष्ठा का महत्त्व होता है। प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह जी ने परसाई के व्यंग्य-शिल्प पर टिप्पणी करते हुए लिखा था, 'हरिशंकर परसाई का व्यंग्य केवल हंसाने के लिए नहीं है, वह पाठक को अपनी आत्मानुकूलता और सामाजिक पाखंड से बाहर निकालकर एक गहरे आत्म-निरीक्षण की ओर ढकेलता है।'

को रेखांकित करते हुए कहा था, 'प्रेमचंद में एक ऐसी पारदर्शिता थी जो केवल उन्हीं में हो सकती है जो स्वयं को मिटाकर सत्य की

साधना करते हैं। वे अपने आवरण को सजाने वाले लेखक नहीं थे, बल्कि अपनी आत्मा को निर्भीक रखने वाले साधक थे।'

यदि आज के वर्तमान समय के संदर्भ में देखें, तो परसाई का यह व्यंग्य पहले से कहीं अधिक सटीक, प्रासंगिक और विचारणीय प्रतीत होता है। आज का युग 'सोशल मीडिया', 'फिल्टर', 'फेक शो-ऑफ' और 'पर्सनल ब्रांडिंग' का युग है, जहां व्यक्ति जो वास्तव में है, उसे छिपाकर वैसा दिखने की अंधी दौड़ में लगा है जैसा समाज और बाजार देखना चाहता है। आज हम एक ऐसे अति-उपभोक्तावादी समाज में जी रहे हैं जहां इंसान का मूल्यांकन उसके आचार-विचार, ज्ञान, संवेदनशीलता या नैतिक मूल्यों से नहीं, बल्कि उसके पहने हुए ब्रांडेड कपड़ों, जूतों, घड़ियों और गाड़ियों से किया जाता है। लोग अपने वास्तविक अस्तित्व और आत्म-सम्मान को भूलकर केवल बाहरी आवरण को चमकाने में लगे हैं। इस दौर में प्रेमचंद का फटा जूता हमें यह शिक्षा देता है कि बाहरी आवरण से अधिक आंतरिक चरित्र, सच्चाई और सत्यनिष्ठा का महत्त्व होता है। प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह जी ने परसाई के व्यंग्य-शिल्प पर टिप्पणी करते हुए लिखा था, 'हरिशंकर परसाई का व्यंग्य केवल हंसाने के लिए नहीं है, वह पाठक को अपनी आत्मानुकूलता और सामाजिक पाखंड से बाहर निकालकर एक गहरे आत्म-निरीक्षण की ओर ढकेलता है।'

प्रेमचंद के फटे जूते से आज के समाज और युवा पीढ़ी को सबसे बड़ी मौलिक शिक्षा यह मिलती है कि हमें दिखावे की अंधी दौड़ से मुक्त होकर अपने यथार्थ को स्वीकार करने का साहस पैदा करना चाहिए। जब तक हम दूसरों को प्रभावित करने के लिए अपनी वास्तविकता को छिपाते रहेंगे और यह जीवन जीते रहेंगे, तब तक हम मानसिक दास्यता और हीनभावना के शिकार बने रहेंगे। यह आलेख हमें सिखाता है कि जीवन के कठोर सत्यों, विषमताओं, सामाजिक अन्यायों और आर्थिक तंगियों से भागने या उनसे आंखें चुराने की बजाय, उनसे आंखें मिलाकर संघर्ष करना ही सच्चे और सशक्त व्यक्तित्व की पहचान है। समझौतापरस्ती क्षणिक आराम तो दे सकती है, लेकिन वह मनुष्य की आत्मा और उसके स्वाभिमान को कुचल देती है। प्रेमचंद का फटा जूता हमें सदा यह याद दिलाता रहेगा कि फटे हुए जूते के साथ भी गर्व से सिर उठाकर मुस्कुराया जा सकता है, यदि आपका विवेक जागृत हो, आपकी ईमानदारी निश्चल हो और आपका स्वाभिमान पूरी तरह अटूट हो।

ग्लासगो में गूंजा भारत का जयघोष

मीराबाई, शर्मिला और दिलीप ने दिलाया स्वर्णिम गौरव

जन जन विचार

...नई दिल्ली

स्कॉटलैंड के ग्लासगो में आयोजित कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में भारतीय खिलाड़ियों ने सीमित स्पर्धाओं के बावजूद अपने प्रदर्शन से पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया है। निशानेबाजी, कुश्ती, बैडमिंटन और हॉकी जैसे भारत के पारंपरिक मजबूत खेल इस बार प्रतियोगिता का हिस्सा नहीं हैं, फिर भी भारतीय दल ने जुझारूपन, प्रतिभा और आत्मविश्वास के दम पर 30 जुलाई तक 15 पदक जीतकर यह साबित कर दिया कि भारत की खेल शक्ति अब कहीं अधिक व्यापक हो चुकी है।

भारत के अभियान की सबसे बड़ी ताकत रहे तीन स्वर्ण पदक, जिन्होंने पूरे देश को गौरवान्वित किया।

सबसे पहले अनुभवी भारोत्तोलक मीराबाई चानू ने महिला 48 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर एक बार फिर साबित किया कि बड़े मंच पर उनसे बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद हमेशा की जा सकती है। टोक्यो ओलंपिक से लेकर विश्व चैंपियनशिप और अब कॉमनवेल्थ गेम्स तक मीराबाई लगातार भारतीय खेलों की सबसे भरोसेमंद खिलाड़ियों में शामिल रही हैं। उनका स्वर्ण केवल एक पदक नहीं, बल्कि भारतीय भारोत्तोलन की निरंतर सफलता का प्रतीक है।

दूसरा स्वर्ण भारत को शर्मिला धनखड़ ने पैरा एथलेटिक्स की महिला शॉट पुट एफ-57 स्पर्धा में दिलाया। शर्मिला की जीत ने यह संदेश दिया कि भारत के पैरा खिलाड़ी अब विश्व खेलों में नई पहचान बना रहे हैं। कठिन परिस्थितियों को चुनौती देकर स्वर्ण



जीतने वाली शर्मिला आज लाखों युवाओं के लिए प्रेरणा बन गई हैं।

तीसरा स्वर्ण भारतीय पैरा एथलेटिक्स के स्टार दिलीप महादू गावित के नाम रहा। उन्होंने पुरुषों की 100 मीटर टी-47 दौड़ में न केवल स्वर्ण पदक जीता बल्कि नया गेम्स रिकॉर्ड भी स्थापित किया। उनकी विस्फोटक दौड़ ने पूरे स्टेडियम को रोमांचित कर दिया। दिलीप की इस उपलब्धि ने भारत के पैरा खेलों की बढ़ती ताकत को दुनिया के सामने मजबूती से स्थापित किया।

भारत की सफलता में रजत पदक विजेताओं का योगदान भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। एथलेटिक्स में मुरली श्रीशंकर ने पुरुष लंबी कूद में शानदार प्रदर्शन करते हुए लगातार दूसरे कॉमनवेल्थ गेम्स में रजत पदक अपने नाम किया। विश्व स्तर पर लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे श्रीशंकर ने यह साबित किया कि भारतीय एथलेटिक्स अब स्थिरता और

गुणवत्ता दोनों के मामले में नई ऊंचाइयों पर पहुंच चुका है।

भारोत्तोलन में रशिकांता सिंह ने पुरुष 60 किलोग्राम वर्ग में रजत पदक जीतकर भारत के खाते में महत्वपूर्ण अंक जोड़े, जबकि राजा मुथुपांडी ने पुरुष 65 किलोग्राम वर्ग में रजत पदक हासिल कर भारतीय भारोत्तोलन की गहराई को दर्शाया।

पैरा एथलेटिक्स में भारत को एक और गौरवपूर्ण क्षण तब मिला जब मोहम्मद बासिल ने पुरुष 100 मीटर टी-47 स्पर्धा में रजत पदक जीता। इसी स्पर्धा में दिलीप महादू गावित के स्वर्ण के साथ भारत ने स्वर्ण और रजत दोनों पदक जीतकर ऐतिहासिक 'वन-टू फिनिश' दर्ज की, जो ग्लासगो खेलों की सबसे यादगार उपलब्धियों में गिनी जा रही है।

कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 का यह संस्करण भारत के लिए इसलिए भी चुनौतीपूर्ण रहा क्योंकि जिन खेलों में देश परंपरागत रूप से सर्वाधिक पदक जीतता रहा है, वे इस बार

प्रतियोगिता का हिस्सा नहीं थे। इसके बावजूद भारतीय खिलाड़ियों ने उपलब्धि अवसरों का पूरा लाभ उठाते हुए दुनिया को यह संदेश दिया कि भारत अब केवल कुछ खेलों तक सीमित नहीं है। एथलेटिक्स, पैरा स्पर्धाओं और भारोत्तोलन में मिली सफलताएं इस बदलाव की स्पष्ट तस्वीर पेश करती हैं।

ग्लासगो कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत का प्रदर्शन केवल पदकों की संख्या से नहीं आंका जाना चाहिए। मीराबाई चानू का अनुभव, शर्मिला धनखड़ का संघर्ष, दिलीप महादू गावित का रिकॉर्ड, श्रीशंकर की निरंतरता और युवा खिलाड़ियों का आत्मविश्वास इस बात के प्रमाण हैं कि भारतीय खेलों का भविष्य मजबूत हाथों में है। सीमित स्पर्धाओं के बावजूद जिस तरह भारतीय खिलाड़ियों ने तिरंगे का मान बढ़ाया है, उसने देशवासियों के मन में भविष्य के ओलंपिक और एशियाई खेलों के लिए नई उम्मीदें जगा दी हैं।

शुभदीप घोष बने टीम इंडिया के फिल्डिंग कोच

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम की सबसे बड़ी कमजोरियों में शामिल खराब क्षेत्ररक्षण को सुधारने के लिए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने बड़ा कदम उठाया है। पूर्व क्रिकेटर और अनुभवी कोच शुभदीप घोष को भारतीय सीनियर पुरुष टीम का नया क्षेत्ररक्षण कोच नियुक्त किया गया है।

हाल के दौरों में भारतीय टीम के फील्डरों के प्रदर्शन में लगातार गिरावट देखने को मिली थी। आसान कैच छोड़ने और मैदान पर गलतियों के कारण टीम को कई महत्वपूर्ण मुकामलों में नुकसान उठाना पड़ा। इसी को ध्यान में रखते हुए बीसीसीआई ने मौजूदा क्षेत्ररक्षण कोच टी दिलीप का अनुबंध आगे नहीं बढ़ाने का फैसला किया।

57 वर्षीय शुभदीप घोष असम से ताल्लुक रखते हैं और उन्होंने घरेलू क्रिकेट में असम तथा रेलवे का प्रतिनिधित्व किया है। उनके पास कोचिंग का लंबा अनुभव है। वह भारतीय महिला टीम, अंडर-19 टीम और 2023 एशियन गेम्स में हिस्सा लेने वाली भारतीय पुरुष टीम के साथ भी काम कर चुके हैं। हालिया जिम्बाब्वे दौर पर भी वह भारतीय टीम के सपोर्ट स्टाफ का हिस्सा थे।

टी दिलीप के कार्यकाल के दौरान भारतीय टीम ने कई शानदार प्रदर्शन किए, लेकिन पिछले कुछ समय में फील्डिंग में गिरावट साफ दिखाई दी। इंग्लैंड दौरे पर छोड़े गए अहम कैचों ने टीम की हार में बड़ी भूमिका निभाई। दूसरे वनडे में जो रूट का कैच छूटना भारत पर भारी पड़ा, जहां उन्होंने शानदार पारी खेलकर इंग्लैंड को जीत दिलाई।

इसके अलावा सहायक कोच रयान टेन डोशेट ने भी टीम इंडिया से अलग होने का फैसला किया है।

15 साल में बड़ी जिम्मेदारी : दलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन के उपकप्तान बने वैभव

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट के उभरते सितारे वैभव सूर्यवंशी ने एक और बड़ी उपलब्धि अपने नाम कर ली है। महज 15 वर्ष की उम्र में उन्हें दलीप ट्रॉफी 2026 के लिए ईस्ट जोन टीम का उपकप्तान नियुक्त किया गया है। यह फैसला न केवल उनके शानदार प्रदर्शन का पुरस्कार है, बल्कि भारतीय क्रिकेट में भविष्य के नेतृत्व की तैयारी का भी संकेत माना जा रहा है।

हाल ही में जिम्बाब्वे के खिलाफ टी-20 श्रृंखला में वैभव ने अपने बल्ले से शानदार प्रदर्शन किया था। तीन मैचों की सीरीज में दो अर्धशतक लगाकर उन्होंने सबसे अधिक रन बनाए और 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' का सम्मान हासिल किया। इसी दौरान वे भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय टी-20 क्रिकेट में सबसे कम उम्र में अर्द्धशतक लगाने वाले बल्लेबाज भी बने।



दलीप ट्रॉफी के लिए घोषित ईस्ट जोन टीम की कमान अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज ईशान किशन को सौंपी गई है, जबकि वैभव सूर्यवंशी उनके उपकप्तान होंगे। घरेलू क्रिकेट में झारखंड का सफल नेतृत्व कर चुके ईशान से चयनकर्ताओं को टीम को खिताब दिलाने की उम्मीद है।

बिहार क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष हर्ष वर्धन ने वैभव की उपलब्धि पर प्रसन्नता जताते हुए कहा कि इतनी कम उम्र में पूर्वी क्षेत्र जैसी प्रतिष्ठित टीम का उपकप्तान बनना बिहार क्रिकेट के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने कहा कि वैभव ने अपने प्रदर्शन, परिपक्वता और अनुशासन से चयनकर्ताओं का भरोसा जीता है। उल्लेखनीय है कि ईस्ट जोन टीम में बिहार से शामिल होने वाले वह एकमात्र खिलाड़ी हैं।

कंधों पर कांवड़, होठों पर 'बोल बम'

जन जन विचार

... गुवाहाटी

सावन आते ही भारत का रंग बदल जाता है। सुबह की पहली किरण के साथ मंदिरों की घंटियां गूंजने लगती हैं, गलियों में 'हर-हर महादेव' का उद्घोष सुनाई देता है और राष्ट्रीय राजमार्गों से लेकर गांव की पगडंडियों तक केसरिया वस्त्रों में सजे लाखों कांवड़िए एक ही दिशा में बढ़ते दिखाई देते हैं। उनके कंधों पर टिकी कांवड़ केवल गंगाजल का भार नहीं उठाती, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था, संकल्प और संस्कृति को भी अपने साथ लेकर चलती है।

सावन का महीना भारत के सबसे बड़े आध्यात्मिक जन-आंदोलनों में से एक का साक्षी बनता है। बिना किसी औपचारिक निमंत्रण के करोड़ों लोग घर-परिवार, कामकाज और सुविधाओं को पीछे छोड़ शिवभक्ति की राह पर निकल पड़ते हैं। कोई 20 किलोमीटर चलता है तो कोई 200 किलोमीटर। कोई नंगे पांव, कोई मौन व्रत रखकर, तो कोई डाक कांवड़ के रूप में बिना रुके अपनी मंजिल तक पहुंचने का प्रण निभाता है।



कठिन यात्रा पर निकल पड़ते हैं लोग

पौराणिक मान्यता है कि समुद्र मंथन के दौरान निकले हलाहल विष को भगवान शिव ने संसार की रक्षा के लिए अपने कंठ में धारण किया था। तभी से जलाभिषेक शिव की आराधना का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। सावन में गंगाजल चढ़ाने का विशेष महत्व इसी कथा से जुड़ा है। लेकिन समय के साथ कांवड़ यात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं रही, बल्कि आत्मसंयम, तप और आत्मविश्वास की यात्रा भी बन गई।



सड़कें बन जाती हैं सेवा का उत्सव

कांवड़ यात्रा का सबसे प्रेरक दृश्य केवल यात्रियों का नहीं, बल्कि उनकी सेवा में जुटे समाज का होता है। जगह-जगह भंडारे, शीतल जल, प्राथमिक चिकित्सा, विश्राम शिविर और स्वास्थ्य जांच की व्यवस्था होती है। कई परिवार पीढ़ियों से इस सेवा को अपना धर्म मानते हैं। यहां न कोई बड़ा होता है, न छोटा—हर कांवड़िया 'भोले का भक्त' होता है।

बदलती कांवड़ यात्रा बदलता भारत

आज की कांवड़ यात्रा परंपरा और आधुनिकता का अनोखा संगम भी है। जीपीएस से रास्ता तलाशते युवा, मोबाइल पर लाइव दर्शन, सोशल मीडिया पर यात्रा की झलकियां और डिजिटल स्वयंसेवक—आस्था ने तकनीक को भी अपना साथी बना लिया है। दूसरी ओर प्रशासन भी ड्रोन निगरानी, चिकित्सा एंबुलेंस, ट्रैफिक प्रबंधन और आपदा नियंत्रण के जरिए इस विशाल आयोजन को सुरक्षित बनाने में जुटा रहता है।

आस्था के साथ जिम्मेदारी भी जरूरी

कांवड़ यात्रा जितनी विशाल होती जा रही है, उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी भी समाज पर है। ध्वनि प्रदूषण से बचना, यातायात नियमों का पालन करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, प्लास्टिक का उपयोग कम करना और नदियों को स्वच्छ रखना भी शिवभक्ति का ही हिस्सा होना चाहिए। भगवान शिव स्वयं प्रकृति के देवता हैं; उनकी पूजा तभी सार्थक होगी जब हम प्रकृति की भी रक्षा करें।

कांवड़ यात्रा केवल मंदिर तक पहुंचने का सफर नहीं, बल्कि अपने भीतर के अहंकार को छोड़कर विनम्रता, सेवा और समर्पण तक पहुंचने की यात्रा है।

जब लाखों कदम एक साथ 'बोल बम' का उद्घोष करते हुए आगे बढ़ते हैं, तब महसूस होता है कि भारत की असली ताकत उसकी विविधता में नहीं, बल्कि उसे जोड़ने वाली साझा आस्था में बसती है।

कांवड़ केवल कंधों पर उठाया जाने वाला जलपात्र नहीं, बल्कि वह विश्वास है जो बताता है कि कठिन से कठिन रास्ता भी आसान हो जाता है, यदि मंजिल भगवान शिव हों और साथ में सेवा, अनुशासन तथा सद्भाव का संकल्प हो।

विदेश में भी गूंजता है 'हर-हर महादेव', कनाडा में 450 शिवलिंगों वाला शिवधाम

जन जन विचार

... नई दिल्ली

श्रावण मास में जब भारत के मंदिरों में शिवभक्ति का उत्साह चरम पर होता है, तब हजारों किलोमीटर दूर कनाडा की शांत वादियों में भी 'हर-हर महादेव' की गूंज सुनाई देती है। बर्फीले पहाड़ों, घने जंगलों और निर्मल वातावरण के बीच स्थित शिवर्पणम मंदिर आज उत्तर अमेरिका में भगवान शिव की आराधना का एक अनूठा केंद्र बन चुका है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है—एक ही परिसर में स्थापित 450 शिवलिंग, जो श्रद्धालुओं को अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करते हैं।

प्रकृति की गोद में बसा शिवधाम

कनाडा के क्यूबेक प्रांत के मॉन्ट-ट्रेम्बला क्षेत्र के निकट स्थित यह मंदिर प्राकृतिक सौंदर्य से घिरा हुआ है। टोरंटो से लगभग छह घंटे और मॉन्ट्रियल से लगभग एक घंटे की दूरी पर स्थित यह शिवधाम उन लोगों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है, जो आध्यात्मिक शांति और प्रकृति दोनों का आनंद लेना चाहते हैं।

450 शिवलिंगों की अद्भुत व्यवस्था

शिवर्पणम मंदिर का सबसे बड़ा आकर्षण काले पत्थर से निर्मित 450 शिवलिंग हैं। इन्हें अत्यंत व्यवस्थित ढंग से स्थापित किया



गया है। परिसर के मध्य में एक विशाल शिवलिंग विराजमान है, जिसके आसपास छोटे-छोटे शिवलिंग स्थापित हैं। निकट ही बना जल फव्वारा पूरे परिसर में दिव्य वातावरण का अहसास कराता है। मंदिर में भगवान शिव की भव्य प्रतिमा और नंदी महाराज की आकर्षक मूर्ति भी श्रद्धालुओं

का ध्यान अपनी ओर खींचती है।

प्रवासी भारतीयों की आस्था का केंद्र

कनाडा में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों के लिए यह मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़े रहने का माध्यम भी है। महाशिवरात्रि, श्रावण सोमवार और अन्य

धार्मिक अवसरों पर यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र होकर जलाभिषेक, रुद्राभिषेक और भजन-कीर्तन में भाग लेते हैं।

एक और अनोखा शिवधाम

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत के होप नगर में स्थित आशा महाकालेश्वर मंदिर भी शिवभक्तों के बीच विशेष प्रसिद्ध है। यहां लगभग आठ फुट ऊंचा विशाल शिवलिंग और 1008 छोटे शिवलिंग स्थापित हैं। मंदिर परिसर में गौशाला भी है, जो भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा का प्रतीक मानी जाती है।

आस्था की कोई सीमा नहीं

विदेशी धरती पर बने ये मंदिर इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा की जड़ें आज विश्वभर में फैल चुकी हैं। शिवर्पणम मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि यह संदेश भी देता है कि श्रद्धा की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती। जहां भक्त हैं, वहीं भगवान का धाम बस जाता है।

हिमालय की गोद हो या कनाडा की वादियां—भगवान शिव के प्रति आस्था हर सीमा को पार कर जाती है। शिवर्पणम मंदिर इस बात का जीवंत उदाहरण है कि संस्कृति केवल भूमि से नहीं, बल्कि श्रद्धा से जीवित रहती है।

জন জন বিচাৰ
সপ্তাহৰ চিন্তা
মানুহে মানুহৰ বাবে,
জীৱনে জীৱনৰ বাবে।
-ডঃ ভূপেন হাজৰিকা

ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ জন জন বিচাৰ

Guwahati, 31 July, 2026 Friday :: শুক্ৰবাৰ, শাওণ, কৃষ্ণ, দ্বিতীয়া, শকাব্দ ১৯৪৮



বান সাহায্যলৈ
বিধায়কসকলৰ এক
মাহৰ দৰমহা দান

গুৱাহাটী/নতুন দিল্লী: অসমৰ ভয়াবহ বান পৰিস্থিতিত লৈ
প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোদীয়ে অসমৰ
সাংসদসকলৰ সৈতে এক উচ্চ
পৰ্যায়ৰ পৰ্যালোচনা বৈঠক
অনুষ্ঠিত কৰি কেন্দ্ৰই ৰাজ্য
চৰকাৰৰ সৈতে সমন্বয় সাধন কৰি
উদ্ধাৰ, সাহায্য আৰু পুনৰ্বাসন কাৰ্য
অব্যাহত ৰাখিব বুলি আশ্বাস দিয়ে।
বৈঠকৰ পিছত প্ৰধানমন্ত্ৰীয়ে
সামাজিক মাধ্যমত জনায় যে
বানাক্ৰান্ত লোকসকলৰ সুৰক্ষা
আৰু মংগল কামনা কৰাৰ লগতে
কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে সকলো ধৰণৰ
সহায় আগবঢ়াই থাকিব।

ইফালে, অসমৰ
বানপীড়িতসকলৰ সহায়ৰ বাবে
ৰাজ্যৰ ৰাজনৈতিক মহলেও
একতা প্ৰকাশ কৰিছে। ৰাইজৰ
দলৰ বাহিৰে সকলো বিধায়কে বান
সাহায্য আৰু পুনৰ্বাসন তহবিললৈ
এমাহৰ দৰমহা দান কৰাৰ ঘোষণা
কৰে। বিধানসভাৰ অধ্যক্ষ ৰঞ্জিত
কুমাৰ দাসে কয় যে তেওঁ,
উপাধ্যক্ষ আৰু বিধানসভা
সচিবালয়ৰ কৰ্মচাৰীসকলেও এই
মানবীয় পদক্ষেপত অংশগ্ৰহণ
কৰিব। সচিবালয়ৰ কৰ্মচাৰীসকলে
এদিনৰ দৰমহা সাহায্য তহবিললৈ
আগবঢ়াব।

বিধানসভাৰ এই সিদ্ধান্তক
স্বাগত জনাই সংসদীয় পৰিক্ৰমা
মন্ত্ৰী পীযুষ হাজৰিকাই জনায় যে
বিজেপিৰ সকলো বিধায়কে এক
মাহৰ দৰমহা দান কৰিব। তৃণমূল
কংগ্ৰেছৰ একমাত্ৰ বিধায়ক
শ্বেৰমান আলী আহমেদেও একে
ঘোষণা কৰিছে।

৫২ বছৰত নেদেখা প্ৰলয়ংকৰ বানঃ অসমত মৃত ৮০, গৃহহীন ৬ লাখৰো অধিক

উদ্ধাৰ-সাহায্যৰ পিছত এতিয়া পুনৰ্বাসনৰ যুদ্ধ

জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

এই বছৰৰ বিধ্বংসী বানত অসমে
অভূতপূৰ্ব ক্ষয়ক্ষতিৰ সন্মুখীন হৈছে।
চৰকাৰী তথ্য অনুসৰি বানত
এতিয়ালৈকে ৮০ জনৰ মৃত্যু ঘটিছে
আৰু ৫.২৪ লাখতকৈ অধিক লোক
এতিয়াও বানৰ কবলত আছে। যদিও
বহু অঞ্চলত পানী লাহে লাহে
নামিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে, তথাপিও
হাজাৰ হাজাৰ পৰিয়াল আজিও গৃহহীন
জীৱন কটাবলগীয়া হৈছে। চৰাইদেউ
জিলাত সৰ্বাধিক প্ৰায় ১.৯ লাখ লোক
এতিয়াও বানপানীৰে ক্ষতিগ্ৰস্ত।

উজনি অসমৰ শিৱসাগৰ,
যোৰহাট, গোলাঘাট, নগাঁও আদি
জিলাত ব্যাপক ক্ষতি হৈছে। বানৰ
ফলত শতাধিক পথ, দলং, মথাউৰি
আৰু অন্যান্য ৰাজহুৱা আন্তঃগাঁথনি
ক্ষতিগ্ৰস্ত হৈছে। বৰ্তমান ৰাজ্যজুৰি
৩৫৪টা সাহায্য শিবিৰ আৰু সাহায্য
বিতৰণ কেন্দ্ৰ চলি আছে, যত প্ৰায়
৩৭ হাজাৰ ৭০০ৰো অধিক বানাক্ৰান্ত
লোকে আশ্ৰয় লৈছে।

মুখ্যমন্ত্ৰী ডাঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই
জনোৱা মতে, চৰকাৰে এতিয়া
উদ্ধাৰৰ লগতে পুনৰ্বাসন আৰু
স্বাভাৱিক অৱস্থা ঘূৰাই অনাক
সৰ্বাধিক অগ্ৰাধিকাৰ দিছে। বানৰ
বাবে বন্ধ কৰি ৰখা বিদ্যুৎ যোগান
পৰ্যায়ক্ৰমে পুনৰ আৰম্ভ কৰা হৈছে
আৰু ক্ষতিগ্ৰস্ত বিদ্যালয়, পথ-দলং
আৰু অন্যান্য অত্যাৱশ্যকীয়



শিৱসাগৰৰ নেপালী খুটিত বানৰ ধ্বংসলীলা-চাৰিওফালে ছটিয়াই থকা মৃত গৰু-ছাগলী আৰু হাঁহ-
কুকুৰাৰ মৃতদেহৰ দুৰ্গন্ধৰ মাজতে ভগ্ন গৃহ আৰু ধ্বংসস্তুপৰ পৰা পুনৰ জীৱন আৰম্ভ কৰাৰ চেষ্টা চলাইছে
বানপীড়িত পৰিয়ালসমূহ।

আন্তঃগাঁথনি পুনৰ নিৰ্মাণৰ কাম
শীঘ্ৰে আৰম্ভ হ'ব।

ইফালে, সেনা, এনডিআৰএফ,
এছডিআৰএফ, অগ্নিনিৰ্বাপক বাহিনী
আৰু অসম আৰক্ষীয়ে অবিৰতভাৱে
উদ্ধাৰ আৰু সাহায্য অভিযান চলাই
আছে। বিৰোধী দলসমূহে চৰকাৰৰ
বান ব্যৱস্থাপনাক লৈ প্ৰশ্ন উত্থাপন

কৰাৰ লগতে স্থায়ী বান নিয়ন্ত্ৰণ ব্যৱস্থা
আৰু ক্ষতিগ্ৰস্ত পৰিয়ালসমূহক অধিক
ক্ষতিপূৰণৰ দাবী জনাইছে।

এই বানৰ প্ৰকোপক বহু স্থানীয়
বাসিন্দাই পাছৰ ৫২ বছৰত নেদেখা
দুৰ্যোগ বুলি অভিহিত কৰিছে।
বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, স্বাভাৱিকতকৈ
৪০০-৫০০ শতাংশ অধিক বৰষুণ

হোৱাৰ ফলতেই এইবাৰৰ বানৰ
ভয়াবহতা অভূতপূৰ্ব ৰূপ লৈছে।
যদিও পানী নামিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে,
তথাপিও লাখ লাখ বানপীড়িতৰ
বাবে পুনৰ্বাসন, জীৱিকা পুনৰ গঢ়ি
তোলা আৰু ক্ষতিগ্ৰস্ত আন্তঃগাঁথনি
পুনৰ নিৰ্মাণ এতিয়া অসমৰ সৰ্ববৃহৎ
প্ৰত্যাহ্বান হৈ পৰিছে।

প্ৰশ্নপত্ৰ ফাঁহি ৰোধী সংশোধনী বিধেয়ক সংসদত গৃহীত

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

দেশজুৰি প্ৰশ্নপত্ৰ ফাঁহি, নকল চক্ৰ আৰু
পৰীক্ষিত সংঘটিত বিভিন্ন অনিয়ম কঠোৰভাৱে
দমন কৰাৰ লক্ষ্যৰে সাৰ্বজনীন পৰীক্ষা অনুচিত
উপায় প্ৰতিৰোধ সংশোধনী বিধেয়ক-২০২৬
সংসদৰ দুয়ো সদনত গৃহীত হৈছে। লোকসভাৰ
পিছত বৃহস্পতিবাৰে ৰাজ্যসভাতো বিধেয়কখন
ধ্বনিমতত অনুমোদিত হয়। এতিয়া কেৱল
ৰাষ্ট্ৰপতিৰ সন্মতি লাভ কৰিলেই আইন হিচাপে
কাৰ্য্যকৰী হ'ব।

বিধেয়কখন গৃহীত হোৱাৰ পিছত
প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোদীয়ে কয়, এই আইনৰ
ফলত দেশৰ পৰীক্ষা ব্যৱস্থাৰ ওপৰত ছাৰ-
ছাৰী, অভিভাৱক আৰু সমাজৰ আস্থা পুনৰ
সুদৃঢ় হ'ব। তেওঁ কয়, বিকশিত ভাৰত গঢ়াৰ

লক্ষ্য সফল কৰিবলৈ স্বচ্ছ, নিৰপেক্ষ আৰু
বিশ্বাসযোগ্য পৰীক্ষা ব্যৱস্থা গঢ়ি তোলাটো অতি
প্ৰয়োজনীয়। প্ৰশ্নপত্ৰ ফাঁহি চক্ৰৰ বিৰুদ্ধে কঠোৰ
ব্যৱস্থা অব্যাহত থাকিব বুলিও তেওঁ স্পষ্ট কৰে।

কেন্দ্ৰীয় ৰাষ্ট্ৰমন্ত্ৰী ডঃ জিতেন্দ্ৰ সিঙে
ৰাজ্যসভাত বিধেয়কখনৰ পক্ষে বক্তব্য ৰাখি
কয়, এই আইন কেৱল প্ৰশ্নপত্ৰ ফাঁহিতেই
সীমাবদ্ধ নহয়। উত্তৰ-কুঞ্জী ফাঁহি, উত্তৰপত্ৰ বা
গণনাযন্ত্ৰভিত্তিক ব্যৱস্থাত হস্তক্ষেপ, ভুৱা
প্ৰৱেশপত্ৰ, ভুৱা জালস্থান সৃষ্টি, পৰীক্ষাত
সংঘবদ্ধ জালিয়াতি আৰু অন্যান্য অনুচিত
কাৰ্য্যকলাপো ইয়াৰ আওতাৰ আঁহৰ। তেওঁ
লগতে জনায় যে সংঘ লোকসেৱা আয়োগ,
কৰ্মচাৰী বাছনি আয়োগ, ৰাষ্ট্ৰীয় পৰীক্ষণ সংস্থা,
বেংক নিয়ন্ত্ৰণ আৰু আন সকলো সাৰ্বজনীন
পৰীক্ষাত এই আইন সমানে প্ৰযোজ্য হ'ব।

আনহাতে, বিৰোধী দলে এই বিধেয়কক



অপৰ্যাপ্ত বুলি অভিহিত কৰি পৰীক্ষা ব্যৱস্থাৰ
মৌলিক সংস্কাৰৰ দাবী তোলে। নেতা
প্ৰতিপক্ষ মন্ত্ৰিকাজুৰি খগেই চৰকাৰৰ ওচৰত
একাধিক প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰাৰ পিছতে বিৰোধী
সদস্যসকলে সদন ত্যাগ কৰে।

বিধেয়কৰ মুখ্য ব্যৱস্থা

প্ৰশ্নপত্ৰ ফাঁহি বা অনুচিত উপায় ব্যৱহাৰত
৫ বছৰৰ পৰা ১০ বছৰলৈ কাৰাদণ্ড আৰু ৫০
লাখ টকালৈ জৰিমনা।

সংঘবদ্ধ অপৰাধৰ ক্ষেত্ৰত ৭ বছৰৰ পৰা
১০ বছৰলৈ কাৰাদণ্ড আৰু ১০ কোটি টকালৈ
জৰিমনা।

জড়িত সেৱা প্ৰদানকাৰী প্ৰতিষ্ঠানৰ ওপৰত
৫ কোটি টকাৰ জৰিমনা আৰু ৮ বছৰলৈ
পৰীক্ষা অনুষ্ঠিত কৰাৰ নিষেধাজ্ঞা।

দ্রুত বিচাৰৰ বাবে বিশেষ ক্ষিপ্ৰ বিচাৰ
আদালত গঠন; দুমাহৰ ভিতৰত তদন্ত আৰু
অভিযোগপত্ৰ দাখিলৰ পিছত তিনিমাহৰ
ভিতৰত বিচাৰ সম্পূৰ্ণ কৰাৰ ব্যৱস্থা।

প্ৰয়োজন অনুসৰি বিশেষ তদন্তকাৰী বাহিনী
অথবা কেন্দ্ৰীয় অনুসন্ধান সংস্থাৰ জৰিয়তে
তদন্ত।

নতুন আইনখনক চৰকাৰে দেশৰ পৰীক্ষা
ব্যৱস্থাত স্বচ্ছতা, জবাবদিহিতা আৰু
বিশ্বাসযোগ্যতা সুদৃঢ় কৰাৰ দিশত এক গুৰুত্বপূৰ্ণ
পদক্ষেপ হিচাপে বৰ্ণনা কৰিছে।

জল জীৱন মিছনঃ ২০২৮ৰ ভিতৰত সম্পূৰ্ণ কৰাৰ লক্ষ্য

অসম বিধানসভাত মন্ত্রী কৃষ্ণেন্দু পালৰ ঘোষণা, স্থগিত আঁচনিসমূহত পুনৰ আৰম্ভ হৈছে নিৰ্মাণকাৰ্য

জন জন বিচাৰ

...শু গুৱাহাটী

ৰাজ্যজুৰি প্ৰতিটো পৰিয়াললৈ পাইপযোগে বিশুদ্ধ খোৱা পানী যোগান ধৰাৰ লক্ষ্যৰে ৰূপায়ণ হৈ থকা জল জীৱন মিছনৰ আঁচনিসমূহৰ কাম পুনৰ পূৰ্ণগতিত আগবাঢ়িছে। অসম বিধানসভাত এই কথা সদৰী কৰি জনস্বাস্থ্য কাৰিকৰী বিভাগৰ মন্ত্রী কৃষ্ণেন্দু পালে কয় যে, ২০২৪ চনৰ অক্টোবৰ মাহত জাৰি হোৱা ষ্টেণ্ডাৰ্ড আদেশৰ বাবে বহু আঁচনিৰ কাম সাময়িকভাৱে স্থগিত হৈছিল। কিন্তু চৰকাৰৰ নতুন নিৰ্দেশ অনুসৰি অধিকাংশ আঁচনিত পুনৰ কাম আৰম্ভ কৰা হৈছে।



বিধায়ক ওৰাজেদ আলী চৌধুৰীৰ প্ৰশ্নৰ উত্তৰত মন্ত্রীগৰাকীয়ে জানিবলৈ দিয়ে যে, চৰকাৰী আদেশ অনুসৰি ২০২৬ চনৰ ১৫ মাৰ্চৰ পৰা ৰেট্ৰফিটিং আৰু

সংশোধিত ৰেট্ৰফিটিং আঁচনিৰ বাহিৰে আন সকলো আঁচনিৰ ক্ষেত্ৰত স্থগিতাদেশ প্ৰত্যাহাৰ কৰা হৈছে। ইয়াৰ ফলত বন্ধ হৈ থকা নিৰ্মাণকাৰ্য পুনৰ আৰম্ভ হৈছে আৰু সংশ্লিষ্ট

কাৰ্যাদেশৰ চৰ্তাৱলী তথা জল জীৱন মিছন ২.০ৰ নিৰ্দেশনা অনুসৰি কাম সম্পূৰ্ণ কৰা হ'ব।

মন্ত্রী পালে কয় যে, চৰকাৰৰ লক্ষ্য হৈছে সকলো যোগ্য গৃহলৈ বিশুদ্ধ খোৱা পানীৰ সংযোগ নিশ্চিত কৰা আৰু এই উদ্দেশ্যে বিভাগে দ্ৰুতগতিত কাম আগবঢ়াই আছে।

আনহাতে, বিধায়ক মৃণাল শইকীয়াৰ প্ৰশ্নৰ উত্তৰত মন্ত্রীগৰাকীয়ে খুমটাই বিধানসভা সমষ্টিৰ তথ্য দাঙি ধৰে। তেওঁৰ মতে, সমষ্টিটোৰ মুঠ ২৫৪ খন পানী যোগান আঁচনিৰ ভিতৰত ২১২ খন সম্পূৰ্ণ হৈছে। ইয়াৰে ১৯৬ খন আঁচনি সম্পূৰ্ণৰূপে কাৰ্যক্ষম,

আনহাতে ১৬ খন আঁচনি বিকল হৈ আছে। বাকী ৩৯ খন আঁচনি নিৰ্মাণধীন অৱস্থাত আছে।

মন্ত্রীগৰাকীয়ে পুনৰ স্পষ্ট কৰে যে, স্থগিতাদেশ উঠাই লোৱাৰ পাছত সকলো নিৰ্মাণকাৰ্য পুনৰ আৰম্ভ হৈছে আৰু ২০২৮ চনৰ ভিতৰত জল জীৱন মিছনৰ সকলো বাকী আঁচনি সম্পূৰ্ণ কৰাৰ লক্ষ্যৰে বিভাগে কাম অব্যাহত ৰাখিছে।

বিধানসভাৰ আলোচনাত মন্ত্রী কৃষ্ণেন্দু পালে উত্থাপিত প্ৰতিটো প্ৰশ্নৰ তথ্যভিত্তিক উত্তৰ আগবঢ়োৱাৰ লগতে ৰাজ্যবাসীক বিশুদ্ধ খোৱা পানীৰ সুবিধা নিশ্চিত কৰাটো চৰকাৰৰ অন্যতম অগ্ৰাধিকাৰ বুলি উল্লেখ কৰে।

অসমত পাকিস্তান-সমৰ্থিত সন্ত্রাসবাদী চক্ৰৰ বিৰুদ্ধে এছটিএফৰ বৃহৎ সফলতা

জন জন বিচাৰ

...শু গুৱাহাটী

অসম আৰক্ষীৰ বিশেষ টাৰ্গেট ফৰ্চ (এছটিএফ)-এ ৰাজ্যত কথিত পাকিস্তান-ভিত্তিক শাহজাদ ভাট্টি নেটৱৰ্ক-ৰ সৈতে জড়িত বুলি সন্দেহ কৰা এটা চক্ৰৰ বিৰুদ্ধে বৃহৎ অভিযান চলাই ধুবুৰী, চিৰাং আৰু বৰপেটা জিলাৰ পৰা তিনিজন সন্দেহভাজন ব্যক্তিক গ্ৰেপ্তাৰ কৰিছে। আৰক্ষীৰ মতে, গোপন তথ্যৰ ভিত্তিত সমন্বিতভাৱে এই অভিযান চলোৱা হয়।

তদন্তকাৰী সংস্থাৰ দাবী অনুসৰি, এই নেটৱৰ্কৰ অনলাইনৰ জৰিয়তে উগ্ৰপন্থী মতাদৰ্শৰ প্ৰচাৰ, গোপন যোগাযোগ, নতুন সদস্য সংগ্ৰহ আৰু ভাৰতবিশোধী কাৰ্যকলাপৰ



ধুবুৰী, চিৰাং আৰু বৰপেটাত একেলগে অভিযান তিনিজন সন্দেহভাজন গ্ৰেপ্তাৰ মোবাইল, চিম কাৰ্ড, বেংকৰ নথি আদি জব্দ

পৰিকল্পনাত জড়িত থকাৰ সন্দেহ কৰা হৈছে। অভিযানত কেইবাটাও মোবাইল ফোন, চিম কাৰ্ড, আধাৰ কাৰ্ড, বেংকৰ পাছবুক, এটিএম কাৰ্ড আৰু আন গুৰুত্বপূৰ্ণ নথি উদ্ধাৰ কৰা

হৈছে। আৰক্ষীৰ মতে, এই চক্ৰটোৱে সংকেতভিত্তিক যোগাযোগ ব্যৱস্থা ব্যৱহাৰ কৰিছিল আৰু ইয়াৰ আৰ্থিক উৎস, যোগাযোগৰ শৃংখল আৰু

সম্ভাৱ্য সহযোগীসকলৰ সন্ধানত তদন্ত অব্যাহত আছে।

এই ঘটনাই পুনৰ এবাৰ সোঁৱৰাই দিয়ে যে আধুনিক যুগত সন্ত্রাসবাদৰ ৰূপ কেৱল সীমান্ত অতিক্ৰম কৰা অনুপ্ৰৱেশতেই সীমাবদ্ধ নহয়; ডিজিটেল মাধ্যম, সামাজিক

যোগাযোগ আৰু গোপন নেটৱৰ্কৰ জৰিয়তেও ৰাষ্ট্ৰীয় সুৰক্ষাৰ প্ৰতি নতুন প্ৰত্যাহ্বান সৃষ্টি হ'ব পাৰে। সেয়ে আইন-শৃংখলা বাহিনীৰ সজাগতা, উন্নত গোয়েন্দা ব্যৱস্থা আৰু জনসাধাৰণৰ সহযোগিতা অত্যন্ত প্ৰয়োজনীয়।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

৩১ জুলাই, ২০২৬ৰ পৰা ৬ আগষ্ট, ২০২৬লৈ

মেঘ: মানসিক খাম - খেয়ালীৰ মাজেৰে সপ্তাহটো পাৰ হ'ব। বৈদেশিক ক্ষেত্ৰৰ লগত জৰিত কৰ্ম কৰ্তা সকলৰ বাবে সপ্তাহটো শুভ। অদৰ্কাৰী খৰচ নিয়ন্ত্ৰণৰ ক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব।

বৃষ: কৰ্মব্যস্ততা বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। চেষ্টাৰ ফলত সাফল্য লাভ। অদৰ্কাৰী আৱেগৰ ফলত খৰচ বৃদ্ধিৰ প্ৰতি সচেতন হওক।

মিথুন: খৰচ বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। কৰ্মক্ষেত্ৰত মতানৈক্যৰ পৰা হ'ব পৰা বাদ বিবাদৰ পৰা বিৰত থাকক। আত্মীয় স্বজনৰ মাজত সুনাম বৃদ্ধি।

কৰ্কট: মানসিক অস্থিৰতা থাকিব। অনাকাঙ্ক্ষিত দুৰ্ভৱনায় মনটো গধুৰ কৰা ৰাখিব পাৰে। কৰ্মৰ ক্ষেত্ৰত শুভ।

সিংহ: আকস্মিক হ'ব পৰা অৰ্থব্যয়ৰ প্ৰতি সচেতন হ'ব। অদৰ্কাৰী বাদ বিবাদৰ পৰা বিৰত থাকক। আবেগীয় সিদ্ধান্তৰ ক্ষেত্ৰত সচেতন হ'ব।

কন্যা: অদৰ্কাৰী কথাত কৰ্মদক্ষতা প্ৰদৰ্শনৰ প্ৰতি সচেতন হ'ব। নিত্য নৈমন্তিক আচৰণৰ ওপৰত সচেতন হ'ব। আকস্মিক ব্যয় বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা।

তুলা: কৰ্মদক্ষতাৰ সুনাম অৰ্জন। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি হ'ব পাৰে। আবেগীয় চেষ্টাৰ বৃদ্ধি।

বৃশ্চিক: অনাকাঙ্ক্ষিত মানসিক আশুংখলতাই আকুলতা বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ।

ধনু: আহেতুক চেষ্টা পৰাক্ৰমৰ পৰা হ'ব পৰা সময় অপচয়ৰ প্ৰতি সচেতন হ'ব। মানসিক অস্থিৰতা থাকিব। বিদ্যাৰ্থীয়ে নিয়ামানুবৰ্তিতা পালন কৰিব।

মকৰ: ব্যৱসায়ীৰ অস্থিৰ সিদ্ধান্তই আৰ্থিক লোকচান কৰিব পাৰে। অধ্যৱসায়ৰ সফল অৰ্জন। মানসিক সুস্থিৰতা বৃদ্ধি।

কুন্ত: শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতনতা ৰাখিব। অস্বাস্থ্যকৰ ভোজনৰ প্ৰতি সচেতনতা ৰাখিব। কৰ্মব্যস্ততা বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে।

মীন: মানসিক অস্থিৰতায় নিদ্ৰক্ষ্য কৰিব পাৰে। বিদ্যাৰ্থীৰ সুনাম বৃদ্ধি। অৰ্থাগমনৰ সম্ভাৱনা আছে।

-হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী

অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা

যোগাযোগ: ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

বহাৰত গ্ৰীষ্মকালীন সাংস্কৃতিক কৰ্মশালাৰ সামৰণি

জন জন বিচাৰ

...শু বহা

অসম চৰকাৰৰ সাংস্কৃতিক পৰিক্ৰমা বিভাগৰ উদ্যোগত, বহা সমজিলা আৰু নগাঁও জিলা প্ৰশাসনৰ সহযোগত তথা শিশু অনুষ্ঠান 'অকণিৰ কবিতা ঘৰ', অসম কেন্দ্ৰীয় সমিতি, বহাৰ পৰিচালনাত অনুষ্ঠিত ১৫ দিনীয়া গ্ৰীষ্মকালীন সাংস্কৃতিক কৰ্মশালাৰ সামৰণি অনুষ্ঠান বৃহস্পতিবাৰে বৰ্ণাঢ়া কাৰ্যসূচীৰে অনুষ্ঠিত হয়।

১৬ জুলাইৰ পৰা বহা মজলীয়া বিদ্যালয়ত অনুষ্ঠিত এই কৰ্মশালাত শতাধিক শিশু আৰু যুৱ-যুৱতীয়ে মাটি আখৰা সত্ৰীয়া নৃত্য, সংগীত আৰু অভিনয়ৰ প্ৰশিক্ষণ লাভ কৰে।

প্ৰশিক্ষক হিচাপে সপোনজ্যোতি ডেকা, ভাগৱী মেধি আৰু সুস্মিতা শইকীয়াই প্ৰশিক্ষণ প্ৰদান কৰে।

অকণিৰ কবিতা ঘৰৰ প্ৰধান সম্পাদক ৰম্ভু মুদৈয়ে আঁত ধৰা সামৰণি অনুষ্ঠান উদ্বোধন কৰে বহা সমজিলাৰ সহকাৰী আয়ুক্ত প্ৰিয়ম ফুকনে। অনুষ্ঠানৰ আৰম্ভণিতে অকণিৰ কবিতা ঘৰৰ কণ-কণ শিশুসকলে অনুষ্ঠানটোৰ প্ৰতিষ্ঠাপক পৰিচালক অৱনী কুমাৰ শইকীয়াৰ ৰচিত স্থায়ী গীত 'উদুলি-মুদুলি অকণিৰ কবিতা ঘৰ' পৰিৱেশন কৰে। ইয়াৰ পিছতে প্ৰশিক্ষার্থীসকলে সত্ৰীয়া নৃত্য, অভিনয় আৰু সংগীতৰ মনোমোহা অনুষ্ঠান পৰিৱেশন কৰি উপস্থিত দৰ্শকক মুগ্ধ কৰে।

অনুষ্ঠানত ২৪ ঘণ্টাত ছয়টা

শাস্ত্ৰীয় নৃত্য পৰিৱেশন কৰি 'গল্ডেন বুক অৱ ৱৰ্ল্ড' ৰেকৰ্ডত স্থান লাভ কৰা বহাৰ তুষ্টিমনা নাথক বিশেষ সম্বৰ্ধনা জনোৱা হয়। লগতে ১৫ দিনীয়া কৰ্মশালাত অংশগ্ৰহণ কৰা ১০০ গৰাকী প্ৰশিক্ষার্থীক অংশগ্ৰহণৰ মানপত্ৰ প্ৰদান কৰা হয়।

সামৰণি অনুষ্ঠানত বহা সমজিলাৰ আয়ুক্ত ডঃ অংকিতা বৰা, নগাঁও জিলা বিজেপিৰ ভাৰপ্ৰাপ্ত সভাপতি সুবৰ্ণ সিং, বহা পৌৰসভাৰ প্ৰাক্তন পৌৰপতি মনজ্যোতি বৰা, উপ-পৌৰপতি অনিমা দাস, বহা মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰাক্তন প্ৰবক্তা যতীন্দ্ৰ কুমাৰ পাৰৈ, বহা মজলীয়া বিদ্যালয়ৰ প্ৰধান শিক্ষয়িত্ৰী জুৰি বৰুৱা, শিল্পী বিমল ডেকাকে ধৰি বহু বিশিষ্ট ব্যক্তি উপস্থিত থাকে।

মিঠা আনাৰস, তিতা বাস্তৱতা

অসম-মেঘালয় সীমান্তৰ গামাইবিমুৰাৰ আনাৰস
খেতিয়কসকল কিয় এতিয়াও ন্যায্য মূল্যৰ অপেক্ষাত ?

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

প্রতি শুকুৰবাৰে অসম-মেঘালয় সীমান্তৰ সৰু গাঁও গামাইবিমুৰা যেন এখন ব্যস্ত বজাৰত পৰিণত হয়। বিভিন্ন প্ৰান্তৰ পৰা ট্ৰাক, পিক-আপ বাহন আৰু শতাধিক খেতিয়কে সতেজ আনাৰস লৈ এই বজাৰলৈ আহে। চৌপাশে বিয়পি পৰা মিঠা সুগন্ধই ক্ৰেতাক আকৰ্ষণ কৰে যদিও এই মিঠা ফলৰ আঁৰত লুকাই আছে খেতিয়কৰ কঠোৰ সংগ্ৰাম আৰু অৰ্থনৈতিক অনিশ্চয়তাৰ কাহিনী।

গামাইবিমুৰা অঞ্চল এতিয়া উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ অন্যতম গুৰুত্বপূৰ্ণ আনাৰস উৎপাদন কেন্দ্ৰ হিচাপে পৰিচিত। প্ৰায় চাহাজাৰ খেতিয়কে বছৰি ২,৫০০-৩,০০০ মেট্ৰিক টন আনাৰস উৎপাদন কৰে। উৎকৃষ্ট সোৱাদ, মিঠাস আৰু গুণগত মানৰ বাবে এই আনাৰসৰ চাহিদা অসম, মেঘালয়কে ধৰি উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ বিভিন্ন বজাৰত ক্ৰমাৎ বৃদ্ধি পাইছে।

কিন্তু বজাৰত চাহিদা বৃদ্ধি পালেও তাৰ প্ৰকৃত লাভ খেতিয়কৰ হাতলৈ নাযায়। অধিকাংশ ক্ষেত্ৰতে মধ্যভোগীয়ে মূল্য নিৰ্ধাৰণ কৰে। ফলত উৎপাদকসকলে নিজৰ উৎপাদনৰ ন্যায্য মূল্য লাভৰ পৰা বঞ্চিত হয়। সংৰক্ষণ ব্যৱস্থা নথকাৰ বাবে ফল দীৰ্ঘদিন ৰাখিব নোৱাৰি, সেয়েহে বহু সময়ত কম মূল্যতে আনাৰস বিক্ৰী কৰিবলৈ বাধ্য হয়।

বানৰ দুৰ্যোগত আগবাঢ়ি অহা স্বেচ্ছাসেৱকসকললৈ গৌৰৱ গগৈৰ কৃতজ্ঞতা

কাৰো ওচৰত কোনো ঋণ নাছিল, তথাপিও মানুহে মানুহৰ বাবে আগবাঢ়ি আহিছিল

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

শেহতীয়া বিধ্বংসী বানপানীৰ সময়ত উদ্ধাৰ আৰু সাহায্য কাৰ্যত আগবাঢ়ি অহা স্বেচ্ছাসেৱক, তৃণমূল পৰ্যায়ৰ সংগঠন আৰু সাধাৰণ জনসাধাৰণলৈ আন্তৰিক কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিছে অসম প্ৰদেশ কংগ্ৰেছৰ সাংসদ গৌৰৱ গগৈয়ে। সামাজিক মাধ্যমত প্ৰকাশ কৰা এক বাৰ্তাত গগৈয়ে কয়, বানৰ ফলত বহু পৰিয়াল গৃহহীন হৈছিল, পথ-দলং উটি যোৱাত বহু গাঁও বিচ্ছিন্ন হৈ পৰিছিল। এনে সংকটময় পৰিস্থিতিত কোনো পূৰ্ব অভিজ্ঞতা নথকা বহু যুৱকে উদ্ধাৰ আৰু সাহায্য সমন্বয়ৰ দায়িত্ব গ্ৰহণ কৰিছিল। তৃণমূল পৰ্যায়ৰ বিভিন্ন সংগঠনেও সাহায্য কাৰ্যৰ মূল ভেটি হিচাপে কাম কৰিছিল।

তেওঁ লগতে কয়, “যিসকল মানুহে কাৰো ওচৰত একো ঋণী নাছিল, তেওঁলোকেই নিজৰ সময়, শ্ৰম আৰু ধন আগবঢ়াই বিপদগ্ৰস্ত লোকসকলৰ কাষত থিয় দিছিল।



ইয়াৰ উপৰি শ্ৰমিকৰ মজুৰি বৃদ্ধি, পৰিবহণ ব্যয়, অনিয়মীয়া বতৰ আৰু আধুনিক কৃষি প্ৰযুক্তিৰ সীমিত সুবিধাই খেতিয়কৰ লাভৰ পৰিমাণ আৰু হ্ৰাস কৰিছে। ফল প্ৰস্তুতকৰণ, পেকেজিং বা মূল্য সংযোজনৰ ব্যৱস্থা নথকাৰ ফলত অধিক আয়ৰ সম্ভাৱনাও অপচয় হৈছে।

কৃষি বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, সঠিক পৰিকল্পনা আৰু বিনিয়োগৰ জৰিয়তে গামাইবিমুৰাক ৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়ৰ আনাৰস উৎপাদন কেন্দ্ৰ হিচাপে গঢ়ি তোলা সম্ভৱ। ইয়াৰ বাবে উন্নত পথ-যোগাযোগ, শীতল সংৰক্ষণ ব্যৱস্থা, খেতিয়ক উৎপাদক সংগঠন গঠন, খাদ্য প্ৰস্তুতকৰণ উদ্যোগ, পোনপটীয়া বজাৰ সংযোগ আৰু ৰপ্তানিৰ সুযোগ সৃষ্টি অতি প্ৰয়োজনীয়। লগতে ডিজিটেল বিপণন ব্যৱস্থাইও খেতিয়কসকলক মধ্যভোগীৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীলতা হ্ৰাস কৰি অধিক লাভজনক বজাৰ

লাভ কৰাত সহায় কৰিব পাৰে।

গামাইবিমুৰাৰ কাহিনীয়ে ভাৰতীয় কৃষিৰ এক বৃহৎ বাস্তৱতা দাঙি ধৰে। কেৱল উন্নত মানৰ শস্য উৎপাদন কৰিলেই যথেষ্ট নহয়; উৎপাদকে যাতে ন্যায্য মূল্য লাভ কৰে, সেই ব্যৱস্থাও সমানে গুৰুত্বপূৰ্ণ। অন্যথা বাম্পাৰ উৎপাদনেও খেতিয়কৰ জীৱনলৈ সমৃদ্ধিৰ সলনি হতাশাহে কঢ়িয়াই আনিব।

অসম-মেঘালয়ৰ আনাৰসে ইতিমধ্যে উপভোক্তাৰ মন জয় কৰিছে। এতিয়া সময় আহিছে এনে নীতি আৰু পদক্ষেপৰ, যিয়ে এই মিঠা ফলৰ প্ৰকৃত সোৱাদ খেতিয়কৰ জীৱনতো কঢ়িয়াই আনিব।

“এখন দেশৰ কৃষি সফলতাৰ প্ৰকৃত মানদণ্ড কেৱল উৎপাদনৰ পৰিমাণ নহয়, সেই উৎপাদন কৰা খেতিয়কৰ মৰ্যাদা, সুৰক্ষা আৰু সমৃদ্ধি।”

এক আগষ্টৰ পৰা পুনৰ আৰম্ভ অৰুণোদয়ৰ ধন বিতৰণ

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

অহা ১ আগষ্টৰ পৰা অসম চৰকাৰৰ জনকল্যাণমূলক অৰুণোদয় আঁচনিৰ আধাৰ-সংযুক্ত ধন বিতৰণ পুনৰ আৰম্ভ হ'ব। এই কথা ঘোষণা কৰি মুখ্যমন্ত্ৰী ডাঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই জনায় যে ৰাজ্যৰ ৩৭.১ লাখ মহিলা হিতাধিকাৰীৰ বেংক হিচাপত পোনপটীয়াকৈ ১,২৫০ টকাকৈ জমা কৰা হ'ব।

আনহাতে, শেহতীয়া বানপীড়িত শিৱসাগৰ, চৰাইদেউ, যোৰহাট আৰু গোলাঘাট জিলাৰ হিতাধিকাৰীসকলে পুনৰ সংস্থাপনৰ সহায়ৰ বাবে এই মাহত ২,৫০০ টকাকৈ লাভ কৰিব।

মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে লগতে জনায় যে আঁচনিখনৰ সৈতে জড়িত যিসকল হিতাধিকাৰীক সহায়ৰ প্ৰয়োজন, তেওঁলোকৰ বাবে অৰুণোদয় সহায়ক নিয়োগ কৰা হ'ব।

ডিছপুৰৰ পৰা জিলা আয়ুক্তসকলৰ সৈতে অনুষ্ঠিত এক ভিডিঅ বৈঠকৰ পিছতে মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে কয় যে আগষ্ট মাহত ৰাজ্যত একাধিক জনকল্যাণমূলক আঁচনিৰ ৰূপায়ণ ত্বৰণিত কৰা হ'ব।

তেওঁ জনোৱা মতে, নিজুত মৈনা আৰু নিজুত বাবু আঁচনিৰ আবেদনপত্ৰ বিতৰণ আগষ্টৰ প্ৰথম সপ্তাহতে আৰম্ভ হ'ব। এই আঁচনিৰ জৰিয়তে অক্টোবৰ মাহত পাঁচ লাখৰো অধিক শিক্ষাৰ্থীক

৩০০ কোটিতকৈ অধিক টকাৰ আৰ্থিক সহায় আগবঢ়োৱাৰ লক্ষ্য নিৰ্ধাৰণ কৰা হৈছে।

ইয়াৰ উপৰি, ১০ আগষ্টৰ পৰা পুনৰ আৰম্ভ হ'ব ৰাজহুৱা ৰেচন আঁচনি। এই আঁচনিৰ অধীনত ৭০ লাখতকৈ অধিক হিতাধিকাৰীয়ে প্ৰতিখন ৰেচন কাৰ্ডৰ বিপৰীতে ১০০ টকা পৰিশোধ কৰি



বিনামূলীয়া চাউলৰ লগতে ১ কিলোগ্ৰাম মচুৰ দাইল আৰু ৰ কিলোগ্ৰাম চেনি লাভ কৰিব।

মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে জিলা প্ৰশাসনক সকলো যোগ্য ব্যক্তিক চৰকাৰী আঁচনিৰ আওতালৈ অনাৰ লগতে কোনো ধৰণৰ বিলম্ব নোহোৱাকৈ সুবিধাসমূহ প্ৰদান কৰাৰ নিৰ্দেশ দিয়ে।

উল্লেখযোগ্য যে, ২০২০ চনত আৰম্ভ হোৱা অৰুণোদয় আঁচনি অসম চৰকাৰৰ অন্যতম মুখ্য পোনপটীয়া আৰ্থিক সাহায্য আঁচনি। এই আঁচনিৰ জৰিয়তে আৰ্থিকভাৱে দুৰ্বল পৰিয়ালৰ মহিলা সদস্যসকলক প্ৰতিমাহে বেংক হিচাপত পোনপটীয়াকৈ আৰ্থিক সহায় আগবঢ়োৱা হয়।

IND

365

IND365অসমne

ৰ বাবে

নগাঁও, জাগীৰোড, হোজাই

লংকা, কঠিয়াতলি, কামপুৰ

বৰপেটা, নলবাৰী

ৰ পৰা সংবাদদাতা বিচৰা হৈছে

IND

365

সম্পাদকীয় কাৰিকৰী ত্ৰুটি নে ডিজিটেল স্বেচ্ছাচাৰ?

প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ এটা ভিডিঅ হঠাতে ‘আইনী অনুৰোধৰ ভিত্তিত ভাৰতত উপলব্ধ নহয়’ বুলি দেখুওৱা আৰু কিছু ঘণ্টাৰ পিছতে পুনৰ সক্ৰিয় কৰি ‘কাৰিকৰী ত্ৰুটি’ বুলি ব্যাখ্যা দিয়াৰ ঘটনাই ডিজিটেল জগতত স্বচ্ছতা আৰু জবাবদিহিতাক লৈ নতুন বিতৰ্কৰ সূচনা কৰিছে। সামাজিক মাধ্যম এতিয়া কেৱল যোগাযোগৰ মাধ্যম নহয়; ই জনমত গঢ়ি তোলা, তথ্য প্ৰচাৰ কৰা আৰু ৰাজহুৱা আলোচনাৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ মঞ্চ। সেইবাবে এনে মঞ্চত কোনো বিষয়বস্তু আঁতৰোৱা

বা সীমাবদ্ধ কৰাৰ ক্ষেত্ৰত সম্পূৰ্ণ স্পষ্টতা আৰু বিশ্বাসযোগ্যতা থাকিবই লাগিব।

যদি ঘটনাটো সঁচাকৈয়ে কেৱল এটা কাৰিকৰী ত্ৰুটি আছিল, তেন্তে ব্যৱহাৰকাৰীক ‘আইনী অনুৰোধ’ৰ দৰে স্পষ্ট বাৰ্তা কয় দেখুওৱা হ'ল? এনে বাৰ্তাই স্বাভাৱিকতেই বহু প্ৰশ্নৰ জন্ম দিয়ে। কেৱল ক্ষমা বিচাৰি বা কাৰিকৰী সমস্যাৰ কথা কৈ কোটি কোটি ব্যৱহাৰকাৰীৰ আস্থা পুনৰ লাভ কৰিব নোৱাৰি। ডিজিটেল প্লেটফৰ্মসমূহৰ সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ প্ৰক্ৰিয়া স্বচ্ছ হ'ব লাগিব আৰু ভুলৰ ক্ষেত্ৰত স্পষ্ট ব্যাখ্যা দিয়াটো তেওঁলোকৰ দায়িত্ব।

শেহতীয়া সময়ত তথ্য-সুৰক্ষা, গোপনীয়তা নীতি, বিষয়বস্তু নিয়ন্ত্ৰণ আৰু ব্যৱহাৰকাৰীৰ অধিকাৰক লৈ একাধিক বিতৰ্কই দেখুৱাইছে যে

বিশ্বব্যাপী প্ৰযুক্তি কোম্পানীসমূহৰ জবাবদিহিতা অধিক শক্তিশালী কৰাৰ সময় আহি পাইছে। ভাৰতৰ দৰে বৃহৎ গণতান্ত্ৰিক দেশত আইন, স্বচ্ছতা আৰু ব্যৱহাৰকাৰীৰ অধিকাৰক সৰ্বোচ্চ গুৰুত্ব দিয়া উচিত। কোনো বহুজাতিক প্ৰতিষ্ঠানেই নিজকে আইনৰ উৰধ্বতন বুলি ভাবিব নোৱাৰে।

ডিজিটেল যুগত আস্থা হৈছে আটাইতকৈ ডাঙৰ সম্পদ। যদি এলগৰিদম, কাৰিকৰী ত্ৰুটি বা অস্পষ্ট নীতিক ঢাল হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা হয়, তেন্তে ব্যৱহাৰকাৰীৰ বিশ্বাস ধ্বংস হ'ব। প্ৰযুক্তিৰ উদ্দেশ্য বিভ্ৰান্তি সৃষ্টি কৰা নহয়, বৰং সত্য, স্বচ্ছতা আৰু দায়বদ্ধতাক শক্তিশালী কৰা। সেই দায়িত্ব পালন কৰাটো প্ৰতিটো ডিজিটেল মঞ্চৰ নৈতিক আৰু সামাজিক কৰ্তব্য।

মত প্ৰকাশৰ স্বাধীনতা আৰু ভাষাৰ শালীনতা

জন জন বিচাৰ

... বামেশ্বৰ শৰ্মা

গণতন্ত্ৰত মত প্ৰকাশৰ স্বাধীনতা প্ৰতিজন নাগৰিকৰ এক মৌলিক অধিকাৰ। চৰকাৰৰ নীতিৰ সমালোচনা কৰা, জনপ্ৰতিনিধিৰ সিদ্ধান্তক প্ৰশ্ন কৰা বা ৰাজহুৱা বিষয়ত নিজৰ মতামত প্ৰকাশ কৰা এখন সুস্থ গণতান্ত্ৰিক সমাজৰ স্বাভাৱিক বৈশিষ্ট্য। কিন্তু এই স্বাধীনতাৰ সৈতে জড়িত থাকে এক সমান গুৰুত্বপূৰ্ণ দায়িত্ব-ভাষাৰ শালীনতা, পাৰস্পৰিক সন্মান আৰু সামাজিক মূল্যবোধ ৰক্ষা কৰা।

শেহতীয়া সময়ছোৱাত সামাজিক মাধ্যম, ৰাজনৈতিক সমাৱেশ আৰু ৰাজহুৱা মঞ্চত ব্যৱহৃত ভাষাৰ ধৰণক লৈ নতুনকৈ আলোচনা আৰম্ভ হৈছে। বহু ক্ষেত্ৰত মতবিৰোধ বা প্ৰতিবাদৰ ভাষা ক্ৰমান্বয়ে কঠোৰ, আক্ৰমণাত্মক আৰু ব্যক্তিগত আক্ৰমণমুখী হৈ পৰিছে। কেতিয়াবা এনে পৰিস্থিতিত সৃষ্টি হয়, যত যুক্তি আৰু তথ্যৰ সলনি অশালীন ভাষাই আলোচনাৰ কেন্দ্ৰবিন্দু দখল কৰে। এনে প্ৰৱণতাই সমাজক কি বাৰ্তা দিয়ে, সেই প্ৰশ্ন আজিৰ সময়ত অত্যন্ত প্ৰাসংগিক।

ভাষা কেৱল যোগাযোগৰ মাধ্যম নহয়; ভাষা এখন সমাজৰ সংস্কৃতি, শিক্ষা, মূল্যবোধ আৰু মানসিকতাৰো প্ৰতিফলন। এজন ব্যক্তিয়ে কেনেকৈ কথা কয়, সেয়াই তেওঁৰ ব্যক্তিত্ব আৰু সামাজিক দায়বদ্ধতাৰ পৰিচয় বহন কৰে। সেইবাবেই সভ্য সমাজত মতভেদ থাকিলেও শালীন ভাষা ব্যৱহাৰৰ ওপৰত সদায় গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হয়।

আজিৰ ডিজিটেল যুগত সামাজিক

ভাষা কেৱল যোগাযোগৰ মাধ্যম নহয়; ভাষা এখন সমাজৰ সংস্কৃতি, শিক্ষা, মূল্যবোধ আৰু মানসিকতাৰো প্ৰতিফলন। এজন ব্যক্তিয়ে কেনেকৈ কথা কয়, সেয়াই তেওঁৰ ব্যক্তিত্ব আৰু সামাজিক দায়বদ্ধতাৰ পৰিচয় বহন কৰে। সেইবাবেই সভ্য সমাজত মতভেদ থাকিলেও শালীন ভাষা ব্যৱহাৰৰ ওপৰত সদায় গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হয়।

আজিৰ ডিজিটেল যুগত সামাজিক মাধ্যমৰ প্ৰভাৱ অত্যন্ত ব্যাপক। এটা মন্তব্য, এটা ভিডিঅ বা এটা ভাষণ মুহূৰ্ততে লাখ লাখ মানুহৰ ওচৰ পায়। এই পৰিস্থিতিত ৰাজহুৱা ব্যক্তিত্ব, ৰাজনৈতিক নেতা, শিক্ষক, সাংবাদিক, শিল্পী আৰু সামাজিক মাধ্যমৰ প্ৰভাৱশালী ব্যক্তিসকলৰ দায়িত্ব আগতকৈ বহুগুণে বৃদ্ধি পাইছে। তেওঁলোকৰ ভাষা বহু যুৱক-যুৱতীৰ বাবে আদৰ্শ বা অনুসৰণীয় হ'ব পাৰে। সেয়ে তেওঁলোকৰ বক্তব্যত সংযম আৰু দায়িত্ববোধ দুয়োটাই সমানে প্ৰয়োজন।

মাধ্যমৰ প্ৰভাৱ অত্যন্ত ব্যাপক। এটা মন্তব্য, এটা ভিডিঅ বা এটা ভাষণ মুহূৰ্ততে লাখ লাখ মানুহৰ ওচৰ পায়। এই পৰিস্থিতিত ৰাজহুৱা ব্যক্তিত্ব, ৰাজনৈতিক নেতা, শিক্ষক, সাংবাদিক, শিল্পী আৰু সামাজিক মাধ্যমৰ প্ৰভাৱশালী ব্যক্তিসকলৰ দায়িত্ব আগতকৈ বহুগুণে বৃদ্ধি পাইছে। তেওঁলোকৰ ভাষা বহু যুৱক-যুৱতীৰ বাবে আদৰ্শ বা অনুসৰণীয় হ'ব পাৰে। সেয়ে তেওঁলোকৰ বক্তব্যত সংযম আৰু দায়িত্ববোধ দুয়োটাই সমানে প্ৰয়োজন।

ইয়াৰ অৰ্থ এইটো নহয় যে তীব্ৰ সমালোচনা কৰিব নোৱাৰি। গণতন্ত্ৰত কঠোৰ প্ৰশ্ন, যুক্তিসংগত আপত্তি আৰু শক্তিশালী প্ৰতিবাদ সম্পূৰ্ণ বৈধ। কিন্তু ব্যক্তিগত অপমান, অশালীন শব্দ বা ঘৃণাসূচক ভাষা ব্যৱহাৰ কৰিলে মূল বিষয়বস্তুটো প্ৰায়েই আৱৰণত পৰি

যায়। ফলত সমস্যাৰ সমাধানৰ সলনি নতুন বিতৰ্কই স্থান লাভ কৰে।

যুৱ প্ৰজন্মক লৈও বিভিন্ন ধৰণৰ মন্তব্য শুনিবলৈ পোৱা যায়। কোনোবাই কয়, নতুন প্ৰজন্মৰ ভাষা আগতকৈ বেছি অনানুষ্ঠানিক; আনহাতে বহুতে এই পৰিৱৰ্তনক মূল্যবোধৰ অৱক্ষয় বুলি বিবেচনা কৰে। বাস্তৱতে, সমগ্ৰ যুৱ সমাজক একে দৃষ্টিৰে চোৱাটো সঠিক নহয়। আজিও অসংখ্য যুৱক-যুৱতীয়ে শালীন ভাষা, ভদ্ৰ আচৰণ আৰু যুক্তিনিষ্ঠ আলোচনাক গুৰুত্ব দিয়ে। কিছুমান ব্যক্তিৰ আচৰণে সমগ্ৰ প্ৰজন্মৰ প্ৰতিচ্ছবি হ'ব নোৱাৰে।

পৰিয়াল, বিদ্যালয় আৰু সমাজ-এই তিনিটা স্তৰেই ভাষা আৰু আচৰণ গঢ়ি তোলাত গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰে। শিশুৰে ঘৰতে প্ৰথম ভাষা শিকে, বিদ্যালয়ত শৃংখলা আৰু

সামাজিক ব্যৱহাৰ আয়ত্ত কৰে, আৰু সমাজত সেই শিক্ষা প্ৰয়োগ কৰে। যদি সকলো স্তৰতে শালীন ভাষাৰ চৰ্চা হয়, তেন্তে ৰাজহুৱা জীৱনতো তাৰ ইতিবাচক প্ৰভাৱ পৰিব।

গণমাধ্যম আৰু সামাজিক মাধ্যমৰ ভূমিকাও ইয়াত উল্লেখযোগ্য। সংবাদ, আলোচনা বা মতামত প্ৰকাশৰ ক্ষেত্ৰত উত্তেজনা সৃষ্টিৰ সলনি তথ্যভিত্তিক, সংযত আৰু দায়িত্বশীল উপস্থাপনা সমাজৰ বাবে অধিক ফলপ্ৰসূ। একেদৰে সামাজিক মাধ্যম ব্যৱহাৰকাৰীসকলেও মতামত প্ৰকাশ কৰাৰ আগতে ইয়াৰ সামাজিক প্ৰভাৱৰ বিষয়ে সচেতন হোৱা উচিত।

ভাৰতীয় সাংস্কৃতিক ঐতিহ্যত মতভেদক শত্ৰুতা বুলি গণ্য কৰা হোৱা নাই। ইতিহাসত বহু দাৰ্শনিক, সাহিত্যিক আৰু সমাজসংস্কাৰকে তীব্ৰ মতবিৰোধ প্ৰকাশ কৰিছে, কিন্তু অধিকাংশ ক্ষেত্ৰতেই যুক্তি, ভাষাৰ সৌজন্য আৰু পাৰস্পৰিক সন্মান অক্ষুণ্ণ ৰাখিছে। এই পৰম্পৰাই আজিও আমাৰ বাবে শিক্ষণীয়।

গণতন্ত্ৰৰ শক্তি কেৱল মত প্ৰকাশৰ স্বাধীনতাতই নহয়, সেই স্বাধীনতাক দায়িত্বশীলভাৱে ব্যৱহাৰ কৰাৰ ক্ষমতাতো নিহিত। যদি ৰাজহুৱা আলোচনা যুক্তি, তথ্য আৰু শালীন ভাষাৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত হয়, তেন্তে মতভেদ থাকিলেও সমাজ অধিক সুস্থ, সহনশীল আৰু গঠনমূলক দিশলৈ আগবাঢ়িব।

সমালোচনা হওক দৃঢ়, কিন্তু ভাষা হওক সংযত। মতবিৰোধ হওক স্পষ্ট, কিন্তু আচৰণ হওক মৰ্যাদাপূৰ্ণ। এখন সভ্য সমাজৰ প্ৰকৃত শক্তি উচ্চস্বৰত নহয়, বৰং যুক্তিসংগত আৰু সন্মানজনক সংলাপত নিহিত থাকে।

আইনৰ শাসন সকলোৰে বাবে সমান হ'ব লাগিব

গণতান্ত্ৰিক ব্যৱস্থাত প্ৰতিজন নাগৰিকৰ শান্তিপূৰ্ণভাৱে প্ৰতিবাদ কৰাৰ সাংবিধানিক অধিকাৰ আছে। কিন্তু এই অধিকাৰৰ প্ৰয়োগ কেতিয়াও হিংসা, ৰাজহুৱা সম্পত্তিৰ ক্ষতি বা আইন-শৃংখলা ভংগ কৰাৰ অনুমতি দিব নোৱাৰে। যদি

কোনো ঘটনাৰ সৈতে জড়িত অভিযোগৰ ভিত্তিত এফআইআৰ ৰুজু হয়, তেন্তে সেই গোচৰৰ পৰৱৰ্তী ব্যৱস্থা আইনৰ বিধান আৰু ন্যায়ালয়ৰ তত্ত্বাৱধানত চলাটোই গণতন্ত্ৰৰ মৌলিক নীতি। আইনৰ শাসনৰ মূল উদ্দেশ্য হৈছে-দোষীক শাস্তি আৰু

নিৰ্দোষীক ন্যায় নিশ্চিত কৰা। কোনো আন্দোলন, ৰাজনৈতিক চাপ বা জনমতক ভিত্তি কৰি আইনী প্ৰক্ৰিয়া প্ৰভাৱিত হ'ব নালাগে। অভিযোগৰ সত্যতা নিৰপেক্ষ তদন্তৰ জৰিয়তে স্পষ্ট হোৱাটো অত্যাৱশ্যক। আইনৰ দৃষ্টিত সকলো সমান-এই নীতিয়েই

গণতান্ত্ৰিক সমাজৰ শক্তি। ন্যায়বিচাৰৰ ওপৰত জনসাধাৰণৰ আস্থা অটুট ৰাখিবলৈ চৰকাৰ, আৰক্ষী আৰু ন্যায়ালয়ে নিজ নিজ সাংবিধানিক দায়িত্ব নিৰপেক্ষভাৱে পালন কৰিব লাগিব। গণতন্ত্ৰত মতভেদ থাকিব পাৰে, কিন্তু আইনৰ

শাসনৰ ক্ষেত্ৰত কোনো আপোচ হ'ব নোৱাৰে। এখন সুস্থ সমাজ গঢ়িবলৈ নাগৰিকৰ অধিকাৰৰ লগতে আইনৰ প্ৰতি সন্মান সন্মান আৰু দায়িত্ববোধ গঢ়ি তোলাও সমানে প্ৰয়োজন। - শংকৰ শাহ
গুৱাহাটী

পিঅ'কেৰ পৰিস্থিতি আৰু পশ্চিম এছিয়াৰ সংকটঃ মোদীৰ উচ্চ পৰ্যায়ৰ সুৰক্ষা বৈঠক

জন জন বিচাৰ

...নতুন দিল্লী

পাক অধিকৃত কাশ্মীৰ (পিঅ'কে)ৰ অস্থিৰ পৰিস্থিতি আৰু পশ্চিম এছিয়াত চলি থকা সংঘাতৰ মাজতে প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোদীয়ে সংসদ ভৱনত কেবিনেট কমিটি অন ছিকিউৰিটি (চিচিএছ)ৰ এক বিশেষ বৈঠকৰ সভাপতিত্ব কৰে। বৈঠকত দেশৰ সুৰক্ষা, জ্বালানি নিৰাপত্তা, সাৰৰ যোগান আৰু অত্যাৱশ্যকীয় সামগ্ৰীৰ উপলব্ধতা নিশ্চিত কৰাৰ ক্ষেত্ৰত গ্ৰহণ কৰা ব্যৱস্থাসমূহৰ বিস্তৃত পৰ্যালোচনা কৰা হয়।

প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ কাৰ্যালয়ে জনোৱা অনুসৰি, পশ্চিম এছিয়াৰ ভূ-ৰাজনৈতিক পৰিস্থিতি আৰু ইয়াৰ ভাৰতৰ ওপৰত সম্ভাৱ্য প্ৰভাৱৰ বিষয়ে বিশদ আলোচনা হয়। লগতে বিশ্বজুৰি সৃষ্টি অনিশ্চয়তাৰ মাজতো দেশত পেট্ৰ'ল, ডিজেল, এলপিজি, এলএনজি, প্ৰাকৃতিক গেছ, সাৰ আৰু অন্যান্য অত্যাৱশ্যকীয় সামগ্ৰীৰ যোগান যাতে ব্যাহত নহয়, তাৰ বাবে সংশ্লিষ্ট মন্ত্ৰালয়সমূহে গ্ৰহণ কৰা ব্যৱস্থাৰ মূল্যায়ন কৰা হয়।

বৈঠকত কেন্দ্ৰীয় গৃহমন্ত্ৰী অমিত শ্বাহ, প্ৰতিৰক্ষা মন্ত্ৰী ৰাজনাথ সিং, বৈদেশিক



পৰিক্ৰমা মন্ত্ৰী এছ. জয়শংকৰ, বিত্তমন্ত্ৰী নিৰ্মলা সীতাৰমণ, ৰাষ্ট্ৰীয় সুৰক্ষা উপদেষ্টা অজিত ডোভালৰ লগতে জে.পি. নাড্ডা, পীযুষ গোৱেল, সৰ্বানন্দ সোণোৱাল আৰু হৰদীপ সিং পুৰীয়েও অংশগ্ৰহণ কৰে। বিভিন্ন মন্ত্ৰালয়ে জ্বালানি আৰু সাৰৰ আমদানি, বিকল্প যোগান ব্যৱস্থা আৰু কৌশলগত মজুত সম্পৰ্কে তথ্য দাঙি ধৰে।

বৈঠকত কেবিনেট সচিব টিভি সোমনাথনে বৰ্তমানৰ আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় পৰিস্থিতিৰ ওপৰত বিস্তৃত উপস্থাপন আগবঢ়াই কয় যে, ভাৰতত

প্ৰয়োজনীয় পেট্ৰ'লিয়াম সামগ্ৰীৰ পৰ্যাপ্ত মজুত আছে আৰু ৰাজহুৱা খণ্ডৰ শোধনাগাৰসমূহ সম্পূৰ্ণ ক্ষমতাতকৈও অধিক হাৰত উৎপাদন অব্যাহত ৰাখিছে। এলপিজি আৰু কেঁচা তেলৰ আমদানিৰ উৎসো বহুমুখীকৰণ কৰা হৈছে, ফলত কোনো এটা অঞ্চলৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীলতা যথেষ্ট হ্ৰাস পাইছে।

ইফালে, আগন্তুক ৰবি শস্যৰ বতৰৰ প্ৰতি লক্ষ্য ৰাখি সাৰৰ পৰ্যাপ্ত যোগান নিশ্চিত কৰাৰ বিষয়েও বিশেষ গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হয়।

প্ৰধানমন্ত্ৰীয়ে কৃষকসকলক কোনো পৰিস্থিতিতেই সাৰৰ অভাৱৰ সন্মুখীন হ'বলৈ নিদিবলৈ সংশ্লিষ্ট বিভাগসমূহক নিৰ্দেশ দিয়ে।

বৈঠকৰ অন্তত কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে স্পষ্ট কৰে যে, বিশ্বজুৰি বৃদ্ধি পোৱা উত্তেজনাৰ মাজতো ভাৰতৰ জ্বালানি, খাদ্য আৰু অৰ্থনৈতিক সুৰক্ষা নিশ্চিত কৰিবলৈ সকলো প্ৰয়োজনীয় পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰা হৈছে। লগতে নাগৰিকৰ স্বাৰ্থ সুৰক্ষিত ৰাখি দেশৰ যোগান শৃংখলা যাতে স্বাভাৱিকভাৱে চলি থাকে, সেই দিশত কেন্দ্ৰই সৰ্বোচ্চ অগ্ৰাধিকাৰ প্ৰদান কৰি আছে।

গড়চুকত অচিনাক্ত বৃদ্ধৰ মৃতদেহ উদ্ধাৰ



গুৱাহাটী: গুৱাহাটীৰ গড়চুক অঞ্চলত প্ৰায় ৭০ বছৰ বয়সীয়া এজন অচিনাক্ত বৃদ্ধৰ মৃতদেহ উদ্ধাৰ হোৱা ঘটনাই চাঞ্চল্যৰ সৃষ্টি কৰিছে। গড়চুকৰ উৰণীয়া সেতুৰ তলত শুই থকা অৱস্থাত মৃতদেহটো প্ৰত্যক্ষ কৰি স্থানীয় লোকে আৰক্ষীক খবৰ দিয়ে।

খবৰ লাভ কৰাৰ পিছতে গড়চুক আৰক্ষীৰ এটা দল ঘটনাস্থলীত উপস্থিত হৈ মৃতদেহটো উদ্ধাৰ কৰি তদন্ত আৰম্ভ কৰে। আৰক্ষীয়ে মৃতদেহটো মৰণোত্তৰ পৰীক্ষাৰ বাবে গুৱাহাটী চিকিৎসা মহাবিদ্যালয় আৰু চিকিৎসালয় (জিএমচিএইচ)লৈ প্ৰেৰণ কৰিছে।

তেওঁৰ পোছাক ৰক্তৰে ৰঙা হৈছিল, আহত আৰক্ষী বিষয়াৰ পৰিয়ালৰ আৱেগিক বক্তব্য

জন জন বিচাৰ

...নতুন দিল্লী

২০ জুলাই দিল্লীৰ জম্মু-মন্ত্ৰত চিজেপিৰ প্ৰতিবাদ কাৰ্যসূচীৰ সময়ত সংঘটিত সংঘৰ্ষত আহত হোৱা দিল্লী আৰক্ষীৰ এজন এচিপিৰ পত্নী আৰু আন আহত আৰক্ষীকৰ্মীৰ পৰিয়ালৰ সদস্যসকলে সংবাদমেলত ঘটনাটোৰ স্মৃতি দাঙি ধৰি গভীৰ উদ্বেগ প্ৰকাশ কৰে।

সংবিধান ক্লাবত অনুষ্ঠিত সংবাদমেলত আহত এচিপিৰ পত্নীয়ে কয় যে, “২০ জুলাই গভীৰ নিশা মোৰ স্বামী ঘৰলৈ উভতি আহোঁতে তেওঁৰ আৰক্ষীৰ পোছাক সম্পূৰ্ণ ৰক্তৰে ৰঙা হৈ আছিল। সেই দৃশ্য দেখি আমাৰ দুবছৰীয়া কন্যাও ভয় খাইছিল।” তেওঁ এই ঘটনাক পৰিয়ালটোৰ বাবে অত্যন্ত বেদনাদায়ক আৰু মানসিকভাৱে আঘাতজনক বুলি বৰ্ণনা কৰে।

আহত আৰক্ষী বিষয়াসকলৰ পৰিয়ালৰ সদস্যসকলে দাবী কৰে যে প্ৰতিবাদস্থলীত উপস্থিত থকা কিছুমান “দুৰ্বৃত্তই” শিলগুটি নিক্ষেপ কৰি আৰক্ষীৰ ওপৰত আক্ৰমণ চলাইছিল। তেওঁলোকৰ মতে, এই

জম্মু-মন্ত্ৰৰ সংঘৰ্ষ



ঘটনাই ছাত্ৰৰ শান্তিপূৰ্ণ প্ৰতিবাদক ক্ষতিগ্ৰস্ত কৰাৰ লগতে সংসদৰ সুৰক্ষা আৰু মৰ্যাদাৰ প্ৰতিও ভাবুকি সৃষ্টি কৰিছিল।

পৰিয়ালৰ সদস্যসকলে আক্ৰমণৰ সৈতে জড়িত ব্যক্তিসকলৰ বিৰুদ্ধে কঠোৰ আইনী ব্যৱস্থা গ্ৰহণৰ দাবী জনায়। একে সময়তে, যিসকল ছাত্ৰৰ হিংসাত্মক ঘটনাৰ সৈতে কোনো সম্পৰ্ক নাই, তেওঁলোকৰ ভূমিকা নিৰপেক্ষ

তদন্তৰ জৰিয়তে পৰ্যালোচনা কৰি প্ৰয়োজন অনুসৰি মুক্তি দিয়াৰ আহ্বানো জনায়।

উল্লেখ্য, ২০ জুলাই জম্মু-মন্ত্ৰত প্ৰতিবাদক কেন্দ্ৰ কৰি আৰক্ষী আৰু প্ৰতিবাদকাৰীৰ মাজত সংঘৰ্ষ সংঘটিত হৈছিল। এই ঘটনাত দিল্লী আৰক্ষীৰ এজন এচিপি সহ কেইবাজনো আৰক্ষীকৰ্মী আঘাতপ্ৰাপ্ত হৈছিল। ঘটনাৰ তদন্ত আৰু আইনী প্ৰক্ৰিয়া অব্যাহত আছে।

মেঘালয়ত ২৯ কোটি টকাৰ ঋণ উদ্ধাৰৰ নিৰ্দেশ

শিলং। মেঘালয়

বিধানসভাৰ ৰাজহুৱা উদ্যোগ সম্পৰ্কীয় সমিতিয়ে চিএমজে ব্ৰহ্মাৰিজৰ পৰা আদায় কৰিবলগীয়া ২৯ কোটি টকাৰ বকেয়া ঋণ উদ্ধাৰৰ অগ্ৰগতিৰ বিষয়ে এক বিস্তৃত প্ৰতিবেদন দাখিল কৰিবলৈ সংশ্লিষ্ট কৰ্তৃপক্ষক নিৰ্দেশ দিছে। সমিতিয়ে জনায় যে কোম্পানীটোৱে ঋণৰ এটা অংশ পৰিশোধ কৰিলেও এতিয়াও বৃহৎ পৰিমাণৰ ধন বকেয়া আছে।

ইয়াৰ উপৰিও, ‘সৌভাগ্য’ আৰু ‘দীনদয়াল উপাধ্যায় গ্ৰাম জ্যোতি যোজনা’ ৰূপায়ণত হিচাপ পৰীক্ষাত উন্মোচিত হোৱা অনিয়মৰ ব্যাখ্যা দিবলৈ ৰাজ্যৰ বিদ্যুৎ বিভাগক এক মাহৰ ভিতৰত প্ৰতিবেদন দাখিল কৰিবলৈ কোৱা হৈছে। ৰাজ্যৰ বিভিন্ন অঞ্চলত ট্ৰান্সফৰ্মাৰৰ অভাৱৰ ফলত বিদ্যুৎ যোগান ব্যাহত হোৱাৰ অভিযোগৰ প্ৰতিও সমিতিয়ে উদ্বেগ প্ৰকাশ কৰি, সমস্যাটো শীঘ্ৰে সমাধানৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিবলৈ বিভাগক নিৰ্দেশ দিছে।

পাৰিবাৰিক ছবিৰ যুগ শেষ...’ বোল্ড দৃশ্য আৰু অশ্লীল ভাষাৰ প্ৰচলনত উদ্বিগ্ন হেমা মালিনী

জন জন বিচাৰ
... বিশেষ প্ৰতিবেদন

ভাৰতীয় চলচ্চিত্ৰ জগতৰ অন্যতম জনপ্ৰিয় অভিনেত্ৰী হেমা মালিনীয়ে অভিনয় জীৱনৰ যাঠি বছৰ সম্পূৰ্ণ কৰাৰ উপলক্ষে নিজৰ দীঘলীয়া যাত্ৰা, ভাৰতীয় চিনেমাৰ পৰিবৰ্তিত ধাৰা আৰু বৰ্তমানৰ ছবিসমূহৰ বিষয়বস্তু সম্পৰ্কে স্পষ্ট মত প্ৰকাশ কৰিছে। বিশেষকৈ ছবিত বোল্ড দৃশ্য, অশ্লীল ভাষা আৰু অত্যাধিক হিংসাৰ ব্যৱহাৰ বৃদ্ধি পোৱাত তেওঁ উদ্বেগ প্ৰকাশ কৰে।

হেমা মালিনীৰ মতে, আজিৰ দিনত পাৰিবাৰিকভাৱে একেলগে বহি উপভোগ কৰিব পৰা ছবিৰ সংখ্যা যথেষ্ট কমি গৈছে। বহু ছবিত অত্যাধিক হিংসা, গালি-গালাজ আৰু বোল্ড দৃশ্য সন্নিবিষ্ট কৰা হয়, যাৰ ফলত পৰিয়ালৰ সকলো সদস্যই একেলগে ছবি চোৱাটো কঠিন হৈ

যাঠি বছৰৰ অভিনয় জীৱনৰ অভিজ্ঞতা ভাগ-
বতৰা কৰিলে ‘ড্ৰিম গাৰ্ল’ হেমা মালিনীয়ে



পৰিছে। তেওঁ কয়, সময়ৰ লগে লগে প্ৰযুক্তি আৰু কাহিনীৰ ধৰণ সলনি হৈছে যদিও পাৰিবাৰিক মূল্যবোধক কেন্দ্ৰ কৰি ছবি নিৰ্মাণৰ ধাৰা বহু পৰিমাণে হ্ৰাস পাইছে।

তামিল ছবিৰে অভিনয় জীৱন আৰম্ভ কৰা হেমা মালিনীয়ে পাছলৈ

হিন্দী চলচ্চিত্ৰ জগতত অসংখ্য জনপ্ৰিয় চৰিত্ৰত অভিনয় কৰি বিশেষ খ্যাতি অৰ্জন কৰে। ‘সপোনৰ বেপাৰী’, ‘সীতা আৰু গীতা’ আৰু ‘বসন্তী’ৰ দৰে চৰিত্ৰসমূহে তেওঁক অনন্য উচ্চতাত উপনীত কৰে। তেওঁৰ মতে, এই চৰিত্ৰসমূহে নাৰীৰ

আত্মবিশ্বাস, সাহস আৰু আত্মনিৰ্ভৰতাৰ এক শক্তিশালী বাৰ্তা সমাজলৈ আগবঢ়াইছিল।

অভিনয়ৰ আগতেই তেওঁ শাস্ত্ৰীয় নৃত্যশিল্পী হিচাপে নিজৰ পৰিচয় গঢ়ি তুলিছিল। আজিও তেওঁ নিয়মীয়াকৈ শাস্ত্ৰীয় নৃত্যচৰ্চা অব্যাহত ৰাখিছে। তেওঁৰ ভাষাত, মঞ্চ তেওঁৰ বাবে এক পবিত্ৰ স্থান। সেইবাবেই তেওঁ কেতিয়াও মঞ্চত চলচ্চিত্ৰৰ নৃত্য পৰিৱেশন নকৰে; কেৱল শাস্ত্ৰীয় নৃত্যকেই নিজৰ সাধনা হিচাপে আগবঢ়াই নিয়ে।

চলচ্চিত্ৰৰ সোঁৱৰণি মনত পেলাই তেওঁ কয় যে, সেই সময়ত চলচ্চিত্ৰ জগতখন মূলতঃ পুৰুষ-প্ৰধান আছিল। তথাপিও শক্তিশালী মহিলা চৰিত্ৰৰ জৰিয়তে তেওঁ নিজস্ব পৰিচয় গঢ়ি তুলিবলৈ সক্ষম হৈছিল। তেওঁৰ মতে, সেই সময়ত এগৰাকী মহিলা অভিনেত্ৰীৰ বাবে এই সফলতা যথেষ্ট তাৎপৰ্যপূৰ্ণ আছিল।

পাছলৈ ৰাজনীতিত প্ৰৱেশ কৰাৰ অভিজ্ঞতাৰ বিষয়েও তেওঁ মন্তব্য কৰি কয় যে, অভিনয় জীৱনৰ দৰে জনসেৱাৰ ক্ষেত্ৰতো তেওঁ নিষ্ঠাৰে কাম কৰি আহিছে। নিজৰ কৰ্মৰ প্ৰতি সততা আৰু দায়বদ্ধতাকেই তেওঁ সফলতাৰ মূলমন্ত্ৰ বুলি উল্লেখ কৰে।

নতুন প্ৰজন্মৰ শিল্পীসকলৰ উদ্দেশ্যে হেমা মালিনীৰ আহ্বান- নিজৰ কামৰ প্ৰতি সদায় সৎ, শৃংখলাবদ্ধ আৰু একাগ্ৰ থাকক। আত্মবিশ্বাস, অধ্যৱসায় আৰু ইতিবাচক চিন্তাধাৰাই দীৰ্ঘম্যাদী সফলতাৰ পথ মুকলি কৰে।

যাঠি বছৰৰ এই দীঘলীয়া শিল্পীজীৱনৰ অভিজ্ঞতাৰে হেমা মালিনীৰ বক্তব্যই কেৱল ভাৰতীয় চলচ্চিত্ৰৰ পৰিবৰ্তিত ৰূপকেই নহয়, পাৰিবাৰিক মূল্যবোধ আৰু সাংস্কৃতিক পৰম্পৰাক কেন্দ্ৰ কৰি নতুন চিন্তাৰো অৱকাশ সৃষ্টি কৰিছে।

ৰুদ্ৰাভিষেকত শৃঙ্গী ব্যৱহাৰৰ বিশেষ তাৎপৰ্য

জন জন বিচাৰ
... হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী

শাওণ মাহ ভগৱান শিৱৰ উপাসনাৰ বাবে আটাইতকৈ পৱিত্ৰ সময় হিচাপে গণ্য কৰা হয়। এই সময়ছোৱাত বহু ভক্তই মন্দিৰ বা ঘৰত ৰুদ্ৰাভিষেক সম্পন্ন কৰি শিৱলিংগত জল, গাখীৰ, দৈ, ঘিউ, মৌ আদি নিবেদন কৰে। এই অভিষেকৰ সময়ত ব্যৱহাৰ কৰা এক বিশেষ উপকৰণ হৈছে শৃঙ্গী। শৃঙ্গী অবিহনে ৰুদ্ৰাভিষেক অসম্পূৰ্ণ বুলি বহু শৈৱ পৰম্পৰাত বিশ্বাস কৰা হয়।



শৃঙ্গী হৈছে গৰু বা অন্য পশুৰ শিঙাৰ আকৃতিৰে নিৰ্মিত এক বিশেষ পূজাৰ পাত্ৰ। ই সাধাৰণতে তাম, ৰূপ বা পিতলৰ দৰে ধাতুৰে তৈয়াৰ কৰা হয়। এই পাত্ৰৰ জৰিয়তে শিৱলিংগত একেৰাহে জলধাৰা প্ৰবাহিত কৰা হয়, যাক ৰুদ্ৰাভিষেকৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ অংগ বুলি ধৰা হয়।

ধাৰ্মিক বিশ্বাস অনুসৰি, শৃঙ্গীৰে নিবেদন কৰা জলধাৰা অবিৰতভাৱে শিৱলিংগত পৰে, যাৰ ফলত অভিষেক শাস্ত্ৰসম্মতভাৱে সম্পূৰ্ণ হয়। শিৱভক্তসকলৰ মতে, এই

অবিচ্ছিন্ন জলধাৰাই ভগৱান শিৱক শীতলতা প্ৰদান কৰাৰ লগতে ভক্তৰ একাগ্ৰতা আৰু ভক্তিভাৱৰো প্ৰতীক।

শিৱমহাপুৰাণ আৰু প্ৰচলিত পুৰাণকথা অনুসৰি, ভগৱান শিৱৰ পৰম ভক্ত নন্দীয়ে শিৱক শৃঙ্গী উপহাৰ হিচাপে আগবঢ়াইছিল। সেই সময়ৰ পৰাই শিৱলিংগত অভিষেক কৰাৰ বাবে শৃঙ্গী এক পৱিত্ৰ আৰু প্ৰিয় পাত্ৰ হিচাপে ব্যৱহাৰ হবলৈ

আৰম্ভ কৰে বুলি জনবিশ্বাস আছে। যদি শৃঙ্গী উপলব্ধ নহয়, তেন্তে তামৰ লোটা বা অন্য পৱিত্ৰ পাত্ৰৰেও অভিষেক কৰিব

পাৰি। কিন্তু জলধাৰা যাতে অবিৰতভাৱে শিৱলিংগত পৰে, সেই বিষয়ে বিশেষ গুৰুত্ব দিব লাগে। শৈৱ ধৰ্মীয় আচাৰ-অনুষ্ঠানত এই নিয়মক শুভ আৰু শাস্ত্ৰসম্মত বুলি গণ্য কৰা হয়। ধাৰ্মিক আস্থা আৰু শৈৱ পৰম্পৰাৰ এই বিশেষ আচাৰে ৰুদ্ৰাভিষেকক অধিক তাৎপৰ্যপূৰ্ণ কৰি তোলে। শাওণ মাহত শৃঙ্গীৰে সম্পন্ন কৰা ৰুদ্ৰাভিষেক আজিও অসংখ্য ভক্তৰ বাবে গভীৰ ভক্তি, গুৰুত্ব আৰু আধ্যাত্মিক সাধনাৰ এক অনন্য প্ৰতীক।

মোবাইল নাথাকিলেই অস্থিৰতা? সাৱধান, ই হব পাৰে ‘নমফবিয়া’

জন জন বিচাৰ
... স্বাস্থ্য বিশেষ

আজিৰ যুগত স্মাৰ্টফোন দৈনন্দিন জীৱনৰ অপৰিহাৰ্য অংশ হৈ পৰিছে। কিন্তু এই সঁজুলিটোৰ ওপৰত অত্যধিক নিৰ্ভৰশীলতা এতিয়া মানসিক স্বাস্থ্যৰ এক নতুন চিন্তাৰ বিষয় হৈ উঠিছে। বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, মোবাইল ফোনৰ পৰা আঁতৰি থাকিব নোৱাৰা বা ফোন হাতত নাথাকিলেই অস্থিৰ, উদ্বিগ্ন বা ভয় অনুভৱ কৰাৰ অৱস্থা ‘নমফবিয়া’ বুলি কোৱা হয়। এই সমস্যা বিশেষকৈ কিশোৰ-কিশোৰী আৰু যুৱ সমাজৰ মাজত দ্ৰুতগতিত বৃদ্ধি পাইছে।

মনোবিজ্ঞানীসকলৰ মতে, সামাজিক মাধ্যম, ক্ষণ্তিকীয়া বাৰ্তা, অনলাইন খেল আৰু অবিৰত নতুন তথ্য লাভ কৰাৰ অভ্যাসে মানুহক অজানিতে ফোনৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল কৰি তোলে। সময়ৰ লগে লগে বহুতে কেৱল প্ৰয়োজনীয় কামৰ বাবেই নহয়, মানসিক স্বস্তিৰ বাবেও ফোন ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে।

নমফবিয়াৰ সাধাৰণ লক্ষণ

ফোনৰ চাৰ্জ কমি আহিলে বা নেটৱৰ্ক নাথাকিলে অস্থিৰতা অনুভৱ কৰা। কোনো জাননী নাথাকিলেও বাৰে বাৰে ফোন পৰীক্ষা কৰা। শুবলৈ যাওঁতেও ফোন কাষতে ৰখা। ফোন পাহৰি গলে বা হেৰুৱালে অতিমাত্ৰাই উদ্বিগ্ন হোৱা। পঢ়া-শুনা, কাম বা পৰিয়ালৰ সৈতে কথোপকথনত মনোযোগ কমি যোৱা। গভীৰ নিশালৈকে পৰ্দা চাই থকাৰ ফলত টোপনি বিয়িত হোৱা। সন্মুখীন আলাপ-আলোচনাতকৈ মোবাইল ব্যৱহাৰত অধিক আগ্ৰহী হোৱা।

কিয় হয় এই সমস্যা?

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, প্ৰতিটো জাননী, বাৰ্তা বা ‘লাইক’-এ মগজুত ডাঙামিন নামৰ ৰাসায়নিক পদাৰ্থ নিঃসৰণ কৰে, যিয়ে আনন্দৰ অনুভূতি সৃষ্টি কৰে। ফলত মগজুৱে বাৰে বাৰে ফোন ব্যৱহাৰ কৰাৰ ইচ্ছা প্ৰকাশ কৰে। একে সময়তে বেংকিং, দিশ নিৰ্দেশনা, অধ্যয়ন, কৰ্মক্ষেত্ৰ আৰু মনোৰঞ্জনৰ বাবে ফোনৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীলতা বৃদ্ধি পোৱাত এই অভ্যাস অধিক শক্তিশালী হয়।

নিজকে এই প্ৰশ্নবোৰ সুধক

সাৰ পোৱাৰ লগে লগে প্ৰথমে ফোন চাওঁ নেকি? এঘণ্টা ফোন ব্যৱহাৰ নকৰিলে অস্থিৰ লাগে নেকি? খোৱা বা কথা পাতি থাকোঁতেও মাজে মাজে ফোন চাওঁ নেকি? একাকিত্ব, বিৰক্তি বা মানসিক চাপ কমাবলৈ ফোন ব্যৱহাৰ কৰোঁ নেকি? ফোনৰ অত্যাধিক ব্যৱহাৰে মোৰ টোপনি, সম্পৰ্ক, পঢ়া বা কামত প্ৰভাৱ পেলাইছে নেকি?

যদি অধিকাংশ প্ৰশ্নৰ উত্তৰ ‘হয়’, তেন্তে ফোন ব্যৱহাৰৰ অভ্যাস পুনৰ মূল্যায়ন কৰাৰ সময় আহিছে।

কেনেদৰে নিয়ন্ত্ৰণ কৰিব?

প্ৰতিদিনৰ পৰ্দা-সময় নিৰ্দিষ্ট সীমাৰ ভিতৰত ৰাখক। আহাৰ গ্ৰহণ, পৰিয়ালৰ সৈতে সময় কটোৱা আৰু শোৱাৰ আগতে ফোন-মুক্ত সময় পালন কৰক। অপ্ৰয়োজনীয় জাননী বন্ধ কৰি ৰাখক।

**Pema Khandu
Completes 10
Years as
Arunachal
Pradesh Chief
Minister**



New Delhi: Arunachal Pradesh Chief Minister Pema Khandu has completed 10 years in office. Union Minister Kiren Rijiju congratulated him, praising the state's progress in infrastructure, governance and social development over the past decade. During a meeting at Parliament House, Rijiju described Khandu's tenure as a period of "historic milestones." In response, Khandu thanked Rijiju for his support and credited Prime Minister Narendra Modi's leadership for Arunachal Pradesh's transformation. He also reaffirmed his government's commitment to building a "Viksit Arunachal" with inclusive development across the state. Khandu assumed office as Chief Minister on July 17, 2016, making him one of the longest-serving chief ministers in the Northeast.

VOICE OF ALL, FOR ALL

JAN JAN VICHAR

WEEKLY

15

Guwahati, Friday, 31 July 2026

E20 Fuel Sparks Consumer Concern Two-Thirds Report Drop in Mileage, Higher Repair Costs

Jan Jan Vichar
... New Delhi

More than a year after the nationwide rollout of E20 petrol, concerns over its impact on vehicle performance continue to grow. A recent consumer survey has revealed that a majority of vehicle owners believe the ethanol-blended fuel has reduced mileage and increased maintenance costs, reigniting the debate over the government's ambitious biofuel programme.

According to a Local Circles survey involving owners of petrol vehicles purchased before 2023, 67% of respondents said their vehicles have experienced a drop of over 10% in fuel efficiency since the beginning of 2025. In addition, 45% reported unusually high wear and tear or a rise in repair and maintenance requirements, raising questions about the compatibility of older vehicles with E20 fuel.



The Centre has acknowledged that E20 petrol may cause a slight reduction in mileage because ethanol contains less energy than conventional petrol. However, it has consistently maintained that the fuel does not damage engines of vehicles designed or certified for E20 use.

E20 petrol, which contains 20% ethanol and 80% petrol, is a key component of India's strategy to reduce crude oil imports, lower carbon emissions and support the domestic sugar and ethanol

industries. While the environmental and economic objectives remain significant, consumer feedback suggests that many owners of older vehicles continue to face practical challenges.

With complaints persisting even after the mandatory rollout, experts believe the government and automobile manufacturers may need to strengthen public awareness, improve compatibility standards and provide clearer guidance for owners of older vehicles to ensure a smoother transition to cleaner fuels.

Virtual Movement Against E20 Fuel Gains Momentum

New Delhi: A virtual campaign opposing the mandatory use of E20 petrol has gained attention after the formation of a pressure group called "E20 Janta Party". Inspired by recent digital protest movements, the group has launched an online campaign demanding that consumers should have the option to choose between E20 fuel and traditional petrol.

The group has raised concerns over possible effects of ethanol-blended petrol on vehicle mileage, engine performance and the compatibility of older vehicles. It has also targeted the government's ethanol policy and demanded greater public consultation before making E20 the only available fuel option.

The debate over E20 petrol has intensified in recent weeks, with vehicle owners and transport groups raising concerns, while the government maintains that the fuel is safe and supports energy security, reduced crude oil imports and lower emissions.

After 180 Years, Assam's Lost Flower Returns to the Hills of Dima Hasao

Jan Jan Vichar
... Guwahati

A rare flowering plant species, believed to have vanished from scientific records for nearly two centuries, has been rediscovered in Assam's Dima Hasao district, bringing fresh attention to the region's extraordinary biodiversity.

The plant, *Rungia mastersii*, was found in the Jatinga Hills during a botanical survey conducted by researchers from Assam University. Scientists Debjoyoti Bhattacharyya and Kangkan Kumar Das documented the discovery, which has now been published in a peer-reviewed international journal.

The species was first identified



**Rare Plant Rediscovery
Highlights Northeast
India's Hidden
Biodiversity**

in 1845 by British botanist J.W. Masters at an unknown location in Assam. Since then, no confirmed sighting of the plant had been recorded, leading experts to believe that it may have disappeared.

Known for its pale green and whitish flowers decorated with delicate purple patterns, *Rungia mastersii* is considered a unique part of Assam's floral heritage. Researchers say its rediscovery re-

flects the unexplored richness of the forests and hills of Northeast India.

However, scientists have warned that the plant's survival remains uncertain due to its limited distribution and lack of detailed ecological information. They have called for more field surveys to locate other populations, study possible threats and develop effective conservation plans.

The discovery is not only a scientific achievement but also a reminder of the importance of protecting Assam's natural ecosystems. The forests of Dima Hasao continue to reveal hidden treasures, proving that the Northeast remains one of India's most valuable biodiversity hotspots.

NEWS IN BRIEF

SIR: 1.5 lakh Meghalaya voters marked as absent shifted, dead or duplicate

Shillong: Nearly 1.5 lakh voters in Meghalaya have been identified under the Absent, Shifted, Dead and Duplicate (ASDD) category during the ongoing Special Intensive Revision (SIR) of electoral rolls, according to the Office of the Chief Electoral Officer (CEO).

Official data shows that 1,49,656 electors (about 6.37% of the state's 23.49 lakh voters) have been classified as ASDD. The list includes 74,851 deceased, 37,914 shifted, 28,826 absent, 5,899 duplicate entries, while 2,166 electors declined to submit enumeration forms. The CEO's office has urged voters to complete and submit their verification forms before the deadline, warning that failure to do so could lead to exclusion from the draft electoral roll, scheduled for publication on August 5. Authorities reported that 99.62% of enumeration forms have been distributed, while 96.95% have already been digitised. However, over 2.24 lakh forms are yet to be geographically mapped, with Ri-Bhoi recording the highest number of pending cases.

Bihar Man Sentenced to 10 Years for Ganja Smuggling

Agartala: A Special NDPS Court in Tripura has sentenced a 55-year-old man from Bihar to 10 years of rigorous imprisonment for smuggling 22.625 kg of ganja through Agartala Railway Station. The convict, Mantu Yadav, was found guilty under Section 20(b)(ii)(c) of the Narcotic Drugs and Psychotropic Substances (NDPS) Act. The court also imposed a Rs 1 lakh fine, with an additional six months' rigorous imprisonment in case of default. According to police, Yadav was arrested on January 11, 2025, after personnel from the Agartala Government Railway Police Station and the Railway Protection Force (RPF) recovered the contraband during a search operation based on specific intelligence.

NSCN(IM) Faction Forms 'Provisional Government'

Jan Jan Vichar
...Kohima

A breakaway faction of the National Socialist Council of Nagalim (Isak-Muivah) has announced the formation of a "provisional government", marking a significant development in the long-running Naga political movement and raising fresh concerns over the future of the peace process.

The newly formed Eastern Flank faction has appointed Ikato I. Chishi Swu, son of late NSCN(IM) co-founder Isak Chishi Swu, as chairman of the provisional government, while Hs Ramsan has been named vice chairman. Both leaders were recently expelled from the parent organisation.

In a statement issued af-



ter a meeting at Mt Horeb Camp, the faction claimed that the spirit of the 1997 ceasefire agreement between the Centre and NSCN(IM) had "ceased to exist." It said the provisional government was necessary to safeguard the Naga political movement until a full-fledged government could be established.

The move is being viewed as a direct challenge to the leadership of veteran NSCN(IM) leader Thuingaleng Muivah and is

expected to deepen divisions within the organisation. The strength of the new faction and the extent of its support remain unclear.

The development comes at a crucial time as the decades-old Naga peace process continues without a final settlement. Political observers believe the emergence of a parallel leadership could complicate ongoing efforts to achieve a lasting and inclusive peace in the region.

35 Postal Bags Burnt in Manipur

Imphal: Thirty-five postal bags containing passports, ATM cards, letters and other important documents were allegedly set on fire during a highway blockade on National Highway-202 in Manipur's Ukhrul district, disrupting postal services in the region.

According to postal officials, the incident occurred on the Yaingangpokpi-Litan Road when a group enforcing the blockade intercepted a convoy transporting consignments from Imphal. The destroyed mail included 30 bags meant for Ukhrul, four for Somdal and one for Kamjong.

6,211 Child Labourers Identified in Assam Over a Decade, More Than 98% Rehabilitated

Jan Jan Vichar
...Guwahati

Assam has identified 6,211 child labourers over the last ten years, of whom 6,123 have been rehabilitated, reflecting a significant effort by the State to combat child labour and reintegrate rescued children into mainstream society.

The figures were placed before the Assam Legislative Assembly by Labour Welfare Minister Rameswar Teli during the Question Hour in response to a query from Congress MLA Mohibur Rohman. According to the minister, the rehabilitation of over 98 per cent of the identified child labourers demonstrates sustained action by government agencies, although the continued discovery of children

engaged in hazardous work indicates that the challenge has not been fully overcome.

The issue recently came into sharp focus after two minor boys were allegedly found engaged in waste-handling work at Gauhati Medical College and Hospital (GMCH). The incident sparked widespread public concern, prompting the hospital authorities to direct the outsourcing agency to remove the worker responsible. The agency also submitted a written assurance that no child labour would be employed in the future.

The Assembly was also informed that 448 labour dispute cases are currently pending in the State, highlighting the need for faster resolution of industrial and employment-related grievances.

Presenting an overview of Assam's employment scenario, the minister stated that the State has 15,43,350 registered job seekers, including 14,67,171 skilled and 76,179 unskilled candidates. The data points to a large workforce awaiting employment opportunities while underscoring the importance of expanding skill-based industries and job creation. The labour sector remains closely linked with Assam's construction and manufacturing industries. According to the minister, 1,037 brick kilns are currently operating across the State, employing 61,792 workers. In another written reply, he informed the House that 7,24,897 construction workers are registered under the state's labour welfare system, making them eligible for various social security and

welfare benefits.

Experts believe that while the rehabilitation figures are encouraging, eliminating child labour requires continuous vigilance, stronger enforcement of labour laws, quality education, and improved economic opportunities for vulnerable families. Poverty, school dropouts and informal employment continue to be among the key factors pushing children into the workforce.

The latest Assembly data presents a mixed picture—one that reflects notable progress in rescuing and rehabilitating children, while also reminding policymakers that sustained monitoring and community participation remain essential to ensure that every child enjoys the right to education, safety and a childhood free from exploitation.

Criminal Elements Joined CJP Protest

Delhi Police Claims : 2,873 Participants Found with Criminal Records, 989 Linked to Serious Cases

Jan Jan Vichar

... New Delhi

The controversy surrounding the Cockroach Janata Party (CJP) protest has intensified after Delhi Police claimed that several people with criminal backgrounds participated in the agitation. According to the police, criminal records of 2,873 individuals who attended the protest were identified, including 989 people allegedly involved in serious offences.

The police stated that among those identified, 101 individuals were accused in murder cases, while others were allegedly linked to crimes including sexual offences, crimes against children under the POCSO Act, robbery and other serious violations. The identification was carried out through facial recognition systems (FRS) and other technical tools.

The claims come after the 20 July Parliament March, during which clashes broke out between protesters and security personnel. Police used batons and tear gas after allegations of stone-pelting and unrest



during the march. More than 100 people, including protesters and police personnel, were reported injured in the incident.

According to Delhi Police, 118 police personnel were injured during the violence. The injured included senior officials from different ranks, including special commissioners, joint commissioners, deputy commissioners and assistant commissioners of police, along with several women officers.

The protest, which continued for several weeks, ended on 25 July after Education Minister Dharmendra Pradhan resigned from his post follow-

ing demands raised by demonstrators.

Earlier, Delhi Police had also issued notices to several social media platforms seeking the removal of posts and videos containing allegedly objectionable and abusive remarks against the Prime Minister during the protest period.

The police claims have sparked a fresh debate over the participation of individuals with criminal backgrounds in public movements. While authorities have stressed the need for maintaining law and order, questions remain over the verification process and the broader implications for democratic protests.

Pakistan Places Nuclear Arsenal Under Single Command Structure

Jan Jan Vichar

... Islamabad

Pakistan has established a new National Strategic Command (NSC) to bring its strategic weapons, including nuclear assets, under a unified command structure. Lieutenant General Syed Amir Raza has been appointed as the first commander of the NSC after being promoted to a four-star general rank.

The move follows recent military reforms that created the post of Chief of Defence Forces (CDF). While the National Command Authority (NCA), led by the Prime Minister, will continue

to hold the final authority over nuclear weapon use, operational control of strategic forces will be handled by the NSC.

The development has raised concerns among security experts in the region. Analysts believe the restructuring aims to strengthen Pakistan's strategic command system and project its military readiness.

According to SIPRI estimates, Pakistan possesses around 170 nuclear warheads, though Islamabad does not officially reveal details of its arsenal. The move comes amid ongoing strategic competition between India and Pakistan.

NEWS IN BRIEF

Ahmedabad Air India Crash Draft Final Probe Report to Reach Supreme Court in October

New Delhi: The Central Government has informed the Supreme Court that the draft final investigation report into the Air India AI171 crash in Ahmedabad will be submitted in a sealed cover during the first week of October. The government told the court that four simulation tests related to the investigation have been completed. The case, seeking an independent court-monitored probe into the June 2025 crash, has been posted for further hearing on October 13.

The Aircraft Accident Investigation Bureau (AAIB) has maintained that cockpit voice recordings and flight data cannot be made public due to statutory restrictions under the Aircraft (Investigation of Accidents and Incidents) Rules, 2025.

The AI171 Boeing 787-8, bound for London Gatwick, crashed shortly after take-off from Ahmedabad in June 2025, killing 260 people, including former Gujarat Chief Minister Vijay Rupani.

High Court Orders Closure of Paytm Payments Bank

New Delhi: The Delhi High Court has ordered the closure of Paytm Payments Bank Ltd. (PPBL), marking the final stage of its liquidation after the Reserve Bank of India (RBI) revoked the bank's licence over repeated regulatory violations.

According to the RBI, the court issued orders on July 8 and July 22, 2026, directing the winding up of the bank under the Banking Regulation Act, 1949 and the Companies Act, 2013. Former State Bank of India Chief General Manager Girikumar M. Nair has been appointed as the official liquidator and will oversee all aspects of the liquidation process, exercising the powers previously held by the bank's board of directors.

The RBI had cancelled PPBL's banking licence in April 2026, citing persistent non-compliance with regulatory norms and concerns over depositor interests. Following the High Court's order, the bank's liquidation will now proceed under court supervision.

Indian Sailors Trapped in Black Sea After Ukraine Attack

Kyiv: The lives of 13 Indian sailors remain at risk after their cargo ship MV Omorfi was caught in missile and drone attacks in the Black Sea. The sailors have appealed for immediate help as repeated drone activity and security threats continue around the vessel.

The Indian Seafarers' Union has urged authorities to ensure the safe evacuation of the crew, stating that the sailors are living under constant fear of further attacks. The union said efforts must be intensified to bring them back safely.

The incident occurred on 18 July 2026 when Ukraine targeted the Marshall Islands-flagged bulk carrier, claiming the ship was carrying Russian military equipment. One Indian merchant navy officer was killed in the attack.

India has expressed concern and reportedly conveyed its protest to Ukraine's ambassador. Russia has denied claims that the vessel was transporting weapons. The safety of the remaining Indian sailors remains a priority amid rising tensions in the region.

EDITORIAL**Education System's Crisis
Time for a Complete Overhaul**

India's education system is facing a serious credibility crisis. Beyond political protests and public debates, the core issue that demands urgent attention is the repeated occurrence of examination paper leaks. For years, students have suffered because the hard work of honest candidates is undermined when question papers reach a privileged few through unfair means.

The digital era has made the problem more complex. Technology, which

should have improved transparency and efficiency, is also being misused to facilitate organised cheating networks. From school examinations to competitive tests and recruitment exams, the menace has spread across different levels of education and employment.

The solution requires more than strict laws. A strong culture of honesty and responsibility must be developed from childhood. Schools, families and society must teach students that success achieved through cheating is not real success. Values such as integrity, fairness and hard work must become the foundation of education.

However, the responsibility does not lie

only with students. The involvement of certain officials and faculty members in examination irregularities has damaged public trust. Those entrusted with protecting the education system must themselves be held accountable.

The government's move to introduce stricter punishment for paper leaks is a welcome step, but laws alone cannot eliminate the problem. A transparent examination system, better technology, independent monitoring and swift action against offenders are equally necessary.

India's education system must shift its focus from merely conducting examinations to building capable and ethical citizens.

Will CJP hurt Congress more than BJP?

Jan Jan Vichar

... Pramode Mallik

What will the Cockroach Janta Party do now? Will it transform into a political party like the Aam Aadmi Party? Buoyed by the unexpected success of the student movement, which brought the apparently invincible Narendra Modi government to its knees and forced HRD Minister Dharmendra Pradhan to resign, the CJP is on cloud. How will its founders and the chief architects of the student movement take advantage of the popularity and chalk out the next plan of action?

CJP: Political Party

CJP founder Abhijit Dipke has made it clear that he and his comrades in arms will not abandon the massive support they have generated around the issue of the NEET paper leak. In a video released after asking the students to go back, he promised that it was "just the beginning" and that there is "a long way to go." He also made it clear that the CJP will focus on improvement of the examination system, more accountability for paper leaks, and ensuring protection of students' interests.

Is it possible to achieve these issues without forming a political party and consolidating the support it has garnered during the Jantar Mantar protests? Talking to journalist Ajit Anjum, Dipke said categorically that the CJP would not become a political party and that he would never contest an election. He also said that the CJP will continue to remain a youth-centric organisation and focus on their problems and raise the issues irrespective of the state and the government. When asked especially if



the CJP would launch a protest in Punjab, he said that it would depend on the future situation.

How may CJP harm Congress?

There are clear indications that the CJP would make deep inroads into states and spread its supporters across the country with a set of programmes.

The CJP will continue with its present action plan and launch a series of protests in places such as Pune, Lucknow, Bengaluru, Jaipur, Hyderabad, and Amritsar.

If it garners enough support to sustain the movement, the cockroaches, as they are called mockingly, may spread to tier-two cities like Patna, Bhagalpur, and Darbhanga in Bihar and similar cities in south Indian states.

Abhijit Dipke has already said that the CJP would visit different states, mobilise young people, and eventually return to Delhi for a larger demonstration in the near future.

He has also urged the people to organise similar protests in districts across India under the slogan of creating a "Jantar Mantar in every district" to broaden youth participation.

Analysts believe that the CJP will transform into a political party sooner or later, but certainly before the General Election 2029.

The BJP has its own electoral plank and electorate, which is not likely to change drastically or dramatically soon.

However, if the CJP turns into a political party and contests elections, it will certainly eat into the votes of the main opposition party—the Congress.

As the grand old party may ride on the anti-incumbency waves and appeal to those voters who are not happy with the government, the CJP may target the same voters because it may raise these issues and apparently criticise the government.

Consequently, a new party raising the issues of the Congress Party will cut into its base and benefit the ruling party.

Congress vs CJP

Consequently, the CJP may cut the Congress Party both ways— it may eat into the support base of the grand old party and hijack its issues.

It may hijack the youth-centric issues of the Congress, like unemployment, a corrupt examination system, an increasingly expensive education system and diminishing space for the youth.

The CJP may attract young voters and lure them away from the Rahul Gandhi-led party.

The space for the Congress Party may further shrink.

The majority of the young voters may move towards the CJP, giving a severe blow to the grand old party.

The Congress Party is aware of this situation, and this is why its grassroots workers and leaders kept themselves away from the student protest for a long time. Spokesperson Pawan Khera came to Jantar Mantar to visit Sonam Wangchuk on hunger strike two days before the educator was forcibly removed. Rahul Gandhi held a separate demonstration outside the prime minister's residence and stole the show. Analysts believe the government swung into action, a police crackdown took place, and ultimately Dharmendra Pradhan resigned when the government feared that the movement might slip into the hands of the Congress. The ruling BJP will not like the grand old party to give another occasion and bring forward a new party.

Jan Jan Vichar
The Student's Corner
Board Exam Focus

Life Processes : A quick Revision

All living organisms need certain basic processes to survive. These are called life processes and include nutrition, respiration, transportation and excretion.

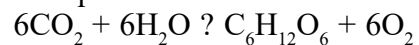
1. Nutrition

Nutrition is the process by which organisms obtain food and use it for energy, growth and repair. Green plants prepare their own food through photosynthesis, using carbon dioxide, water, sunlight and chlorophyll. Humans and animals depend on plants or other animals for food, making them heterotrophs. In humans, nutrition involves five steps: ingestion, digestion, absorption, assimilation and egestion.

2. Photosynthesis

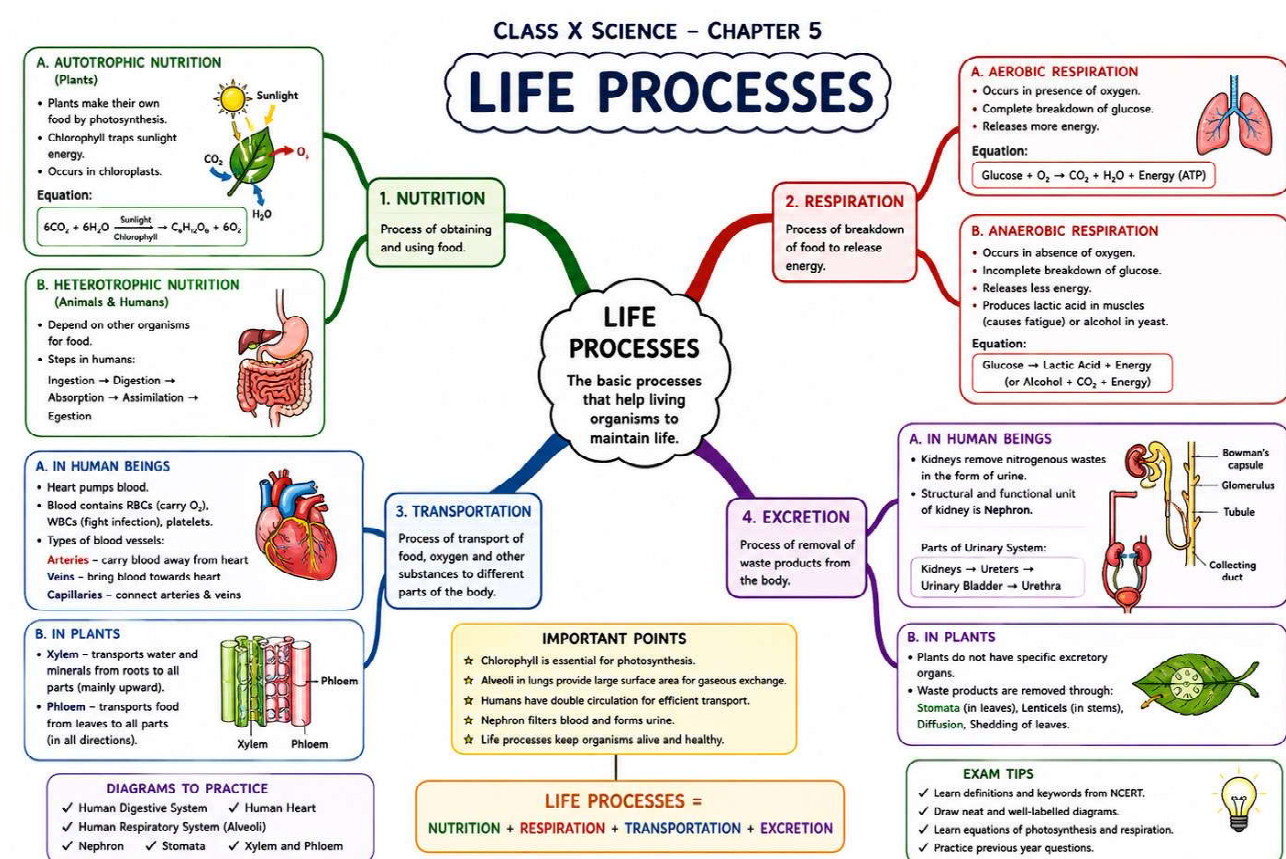
Photosynthesis is the process by which green plants convert solar energy into chemical energy (glucose). It takes place in the chloroplasts of leaf cells. Oxygen is released as a by-product. This process is the primary source of food and oxygen for almost all living organisms.

Equation:



3. Respiration

Respiration is the process of breaking down glucose to release energy in the form of ATP (Adenosine Triphosphate). Aerobic respiration occurs in the presence of oxygen and releases more energy, while anaerobic respiration occurs without oxygen and produces less



energy. In humans, gas exchange takes place in the alveoli of the lungs.

4. Human Digestive System

The digestive system breaks down complex food into simple, soluble substances that can be absorbed into the bloodstream. Digestion begins in the mouth and continues in the stomach and small intestine with the help of digestive enzymes. The small intestine is the main site of nutrient absorption.

5. Transportation in Human Beings

The circulatory system trans-

ports oxygen, nutrients, hormones and waste materials throughout the body. The heart pumps blood continuously through arteries, veins and capillaries. Humans have double circulation, where blood passes through the heart twice during one complete cycle, ensuring efficient oxygen supply.

6. Transportation in Plants

Plants transport water and minerals from the roots to the leaves through xylem, while phloem carries prepared food from the leaves to all parts of the plant. This transport system helps plants grow and

survive.

7. Excretion in Human Beings

Excretion is the removal of metabolic waste from the body. The kidneys filter blood and remove wastes in the form of urine. The nephron is the structural and functional unit of the kidney, responsible for filtration, reabsorption and urine formation.

8. Excretion in Plants

Plants do not have a specialised excretory system. They remove wastes through stomata, lenticels, leaf fall and by storing waste substances in leaves, bark and vacuoles.

Some Important Questions

1-Mark Questions

- Define life processes.
- What is the function of chlorophyll?
- Name the structural and functional unit of the kidney.
- What is ATP?
- Name the tissue that transports water in plants.
- Which blood vessel carries oxygenated blood from the lungs to the heart?
- Name the organ where most digestion takes place.
- What is the function of bile juice?
- Define aerobic respiration.
- Name the site of gaseous exchange in the lungs.

2-Mark Questions

- Differentiate between autotrophic and heterotrophic nutrition.
- Differentiate between aerobic and anaerobic respiration.
- Differentiate between arteries and veins.
- Differentiate between xylem and phloem.

- Explain the role of hydrochloric acid in the stomach.

3-Mark Questions

- Explain the process of photosynthesis. Write its balanced chemical equation.
- Explain the process of nutrition in Amoeba with a labelled diagram.
- Describe the structure and functions of the human heart.
- Explain double circulation in human beings.
- Explain transportation of water and minerals in plants.
- Describe the process of urine formation in a nephron.
- Explain the role of alveoli in respiration.

5-Mark Questions

- Draw a labelled diagram of the human digestive system and explain digestion.
- Draw a labelled diagram of a nephron and explain urine formation.
- Explain the process of transportation in human beings with the help of a labelled heart diagram.
- Compare nutrition, respiration, transportation and excretion in plants and animals.

- Explain excretion in human beings with a neat labelled diagram.

Competency-Based Questions

- A person climbs a mountain and starts breathing rapidly. Explain why this happens using the concept of respiration.
- Why do athletes breathe faster after running a race?
- Why are arteries thick-walled while veins are thin-walled?
- Why do plants not require a circulatory system like humans?
- Why does food travel only in one direction in the alimentary canal?
- Why is the small intestine long and highly coiled?
- Explain why diffusion alone cannot meet the oxygen requirement of multicellular organisms.
- Why is double circulation important in human beings?

Important Diagrams

Human Heart, Human Digestive System, Human Respiratory System (Alveoli), Nephron, Stomata, Xylem and Phloem

'Rao Bahadur' Arrives on Netflix

Jan Jan Vichar

...New Delhi

After completing its theatrical run, the psychological dark comedy Rao Bahadur, presented under actor Mahesh Babu's GMB Entertainment banner, is all set to make its digital debut. The Telugu-language film, which hit cinemas on July 3, will begin streaming on Netflix from July 31, offering audiences another chance to experience its gripping mystery and dark humour.

Directed, written, and edited by Venkatesh Maha, Rao Bahadur revolves around Bhuvanam Ramappa Rao Bahadur, a wealthy patriarch haunted by suspicion and paranoia.



Convinced that his younger son Kusuma was not his biological child, Ramappa secretly orders a DNA test years after the son's death by exhuming his remains. His obsession unravels

long-buried family secrets, leading to a series of shocking revelations that blur the line between truth, grief, and delusion.

The film stars Satyadev in the lead role alongside

Deepa Thomas, Muppala, Pala Parasar, Anand, and an ensemble cast. Praised for its unconventional storytelling and psychological depth, the film combines elements of mystery, satire,

and emotional drama.

Netflix announced the digital release through its official social media handles, inviting viewers to witness a story that challenges societal norms while exploring the complexities of family relationships and human psychology.

Presented by Mahesh Babu and Namrata Shirodkar under the GMB Entertainment banner, Rao Bahadur is expected to find a wider audience on OTT after generating curiosity during its theatrical release.

With its intriguing premise and strong performances, the film is likely to appeal to viewers who enjoy psychological thrillers blended with dark comedy.

Assam Battles Devastating Floods

Bhumi Pednekar Appeals for Nationwide Support



Jan Jan Vichar

...Guwahati/Mumbai

Bollywood actress Bhumi Pednekar has made an emotional appeal to people across the country to extend support to the flood-affected families in Assam, where the humanitarian crisis continues to deepen.

With over 7.2 lakh people affected across 11 districts and several major rivers flowing above the danger mark, the actress urged citizens to stand in solidarity with the state by contributing essential relief materials and donations.

In a video shared on Instagram, Bhumi said the floods have displaced lakhs of people, claimed dozens of lives and destroyed entire villages. She appealed for immediate assistance, stressing that many families have lost everything, including their homes, livestock and livelihoods.

Recalling how people from across India united to help disaster-hit regions in the past, Bhumi expressed confidence that the nation would once again come together for Assam. She urged people to contribute towards food, mattresses, sanitation supplies, evacuation efforts and other essential relief needs.

'If you see the visuals, your heart will break. Assam really needs our support. I request everyone to donate as much as possible and spread this message so that help reaches those who need it,' she said.

Sharing the video, the actress wrote, 'Assam's drowning, you've shown up every time, show up for them now.'

A child asked his father, "How were people born? So his father said, "Adam and Eve made babies, then their babies became adults and made babies, and so on. The child then went to his mother, asked her the same question and she told him, "We were monkeys then we evolved to become like we are now." The child ran back to his father and said, "You lied to me!" His father replied, "No, your mom was talking about her side of the family."

D.S. ASSOCIATES
 TAX CONSULTANTS

TRUSTED ADVISORS

ONE-STOP SOLUTION

ALL YOUR TAX & FINANCE NEEDS UNDER ONE ROOF
 Expert, reliable and timely solutions for individuals, businesses & startups — handled by experienced professionals you can trust.

OUR SERVICES

- Income Tax Returns
- Audit
- Loans
- Company Registration
- Trademark Registration
- Subsidy Related Works
- GST Registration & Filing
- Accounting & Book Keeping
- Insurance
- Import & Export Compliance
- FSSAI Registration
- Documentation Services

...AND MANY MORE SERVICES

CONTACT US TODAY
 E-Mail : dssalestax@gmail.com

Dhaneshwar Choudhary
 70026 82705

Subhash Choudhary
 84728 20656